हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

गिरिराज

साप्ताहिक

डाक पंजीकरण संख्याः एच.पी./42/एस.एम.एल. 2009 साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

वर्ष 31 अंक 42 शिमला, 22–28 जुलाई, 2009 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपये वार्षिक 140 रुपये आजीवन 1500 रुपये website : himachalpr.gov.in/giriraj.asp

घर बैठे गिरिराज पाइये

गिरिराज का आजीवन ग्राहक बनने के लिए सदस्यता शुल्क 1500 **रुपये** बैंक ड्राफ्ट या मनिआर्डर के माध्यम से **निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क, शिमला**–2 व वार्षिक सदस्य बनने के लिए सदस्यता शुल्क 140 **रुपये, सम्पादक, गिरिराज साप्ताहिक, शिमला**–171005 के नाम से भेजे।

पते में पिन कोड एवं दूरभाष या मोबाइल नं. लिखना न भूलें

इस अंक में

साहित्य...	5
आस्था/संस्कृति/विविध...	6
विविध...	7
कृषि/बागबानी...	8
महिला/बाल जगत/स्वास्थ्य ...	9
पहाड़ी पृष्ठ	10

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल शिमला में 'बेटी अनमोल है' जागरूकता अभियान को झंडी दिखाकर शुभारम्भ करते हुए

पंचायत स्तर पर स्थापित होंगे 3366 लोक मित्र केन्द्र

प्रदेश में सूचना प्रौद्योगिकी की बेहतर सेवाएं लोगों के घरद्वार पर उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से, ग्राम पंचायत स्तर पर 3366 लोक मित्र केन्द्र स्थापित किए जा रहे हैं। राज्य की राजस्व न्यायालयों तथा जन वितरण प्रणाली को कम्प्यूट्रीकृत करने के साथ–साथ हिमस्वां नेटवर्क का विस्तार उप तहसील स्तर तक किया जा रहा है। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने यह जानकारी गत दिनों शिमला में प्रदेश के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा केन्द्रीय सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सहयोग से 'राष्ट्रीय ई प्रशासन योजना' के तहत आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर दी।

मुख्य मंत्री ने कहा कि वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी लोगों के रोजमर्रा के जीवन का अहम हिस्सा बन चुकी है। इसके माध्यम से वे महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त करने के साथ–साथ बाहरी दुनिया से भी लगातार जुड़े रहते हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में वर्ष 2001 में हमीरपुर जिला में प्रयोग के तौर पर लोक मित्र केन्द्रों का शुभारम्भ किया गया था, जिससे लोगों को सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं उपलब्ध करवाने में सुखद परिणाम सामने आए हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में हिमाचल की सराहना

उन्होंने कहा कि 3366 लोक मित्र केन्द्र स्थापित कर इस योजना को राज्य में ग्राम पंचायत स्तर तक बढ़ाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में एक अन्य योजना राज्यव्यापी क्षेत्र नेटवर्क (हिमस्वां) के तहत राज्य की उप तहसील राजस्व इकाइयों को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से जिला तथा राज्य मुख्यालयों के साथ जोड़ा जा रहा है। उन्होंने कहा कि इंदिरा गांधी मेडिकल कालेज अस्पताल शिमला में आने वाले रोगियों की सुविधा के लिए अस्पताल प्रबन्धन प्रणाली आरम्भ की गई है, जिसे प्रदेश के अन्य प्रमुख अस्पतालों में भी आरम्भ किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि जन शिकायतों को प्रभावी तरीके से निपटाने के उद्देश्य से ई–समाधान योजना आरम्भ की गई है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में राजस्व रिकार्ड का कम्प्यूट्रीकरण कार्य लगभग पूरा हाने वाला है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के लगभग सभी डिग्री कालेजों में कम्प्यूटर प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं, जहां विद्यार्थियों को सूचना प्रौद्योगिकी तथा बिजनैस (शेष पृष्ठ 11 पर)

'बेटी अनमोल है' जागरूकता अभियान आरम्भ

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने लोगों का आह्वान किया है कि समाज में घटते महिला लिंग अनुपात के कारण पैदा हो रहे असंतुलन को दूर करने के लिए कन्या को बचाने की दिशा में सरकर द्वारा किए जा रहे प्रयासों में अपना सक्रिय सहयोग दें। मुख्य मंत्री गत दिनों शिमला में प्रदेश में महीना भर चलने वाले 'बेटी अनमोल है' अभियान के शुभारम्भ अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर जागरूकता वैन को हरी झण्डी दिखाकर इस अभियान का शुभारम्भ किया। मुख्य मंत्री ने कहा कि महिलाओं की घटती संख्या के कारण लिंग अनुपात में पैदा हो रहे असंतुलन को यदि समय रहते दूर नहीं किया गया तो समाज में और भी विकट परिस्थितियां पैदा हो सकती हैं तथा भविष्य में यह स्थिति इस स्तर तक पहुंच सकती है कि वर्ष 2031 तक सात पुरुषों के मुकाबले केवल एक ही महिला होगी। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शून्य से 6 वर्ष आयु वर्ग में महिला लिंग अनुपात में चिंताजनक कमी आई है तथा राज्य स्तर पर भी स्थिति बेहतर नहीं है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश देश के उन दस राज्यों में शामिल है, जहां महिला लिंग अनुपात वर्ष 1991 में 976 से कम होकर 2001 में 968 रह गया है तथा 6 वर्ष की आयु वर्ग के बाल लिंग अनुपात में वर्ष 1991 में 951 से कम होकर वर्ष 2001 में 897 रह गया है, जो कि 54 अंकों की कमी है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के कांगड़ा, हमीरपुर, ऊना तथा मण्डी जिलों में बाल लिंग अनुपात दर में सर्वाधिक कमी पाई गई है।

सर्वाधिक कन्या जन्म दर वाली पंचायतों को मिलेगा पांच लाख का विशेष अनुदान

प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश में इस दिशा में सुधारात्मक प्रयास आरम्भ किए गए हैं तथा पूर्व प्रसव लिंग जांच पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया है तथा जन्म पंजीकरण को अनिवार्य बनाने के साथ–साथ दो लड़कियों के उपरांत परिवार नियोजन अपनाने वाले परिवारों को प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं। इसके अलावा भ्रूण हत्या के मामले में जानकारी देने वालों को पुरस्कार देने का प्रावधान किया गया है लेकिन इन प्रयासों के बावजूद भी इस दिशा में वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हुए हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने सर्वाधिक कन्या जन्म दर वाली ग्राम पंचायतों को पांच लाख रुपये की विशेष विकास ग्रांट देने की घोषणा की है ताकि समाज में पैदा हो रहे इस असंतुलन की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया जा सके। निदेशक स्वास्थ्य सेवाएं डा. सुलक्षणा पुरी ने मुख्य मंत्री का स्वागत करते हुए कन्या को बचाने के लिए चलाई जा रही गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। राज्य कार्यक्रम अधिकारी डा. सुरिति गंजू ने राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर वर्तमान लिंग अनुपात के बारे में प्रस्तुति दी। वन मंत्री श्री जे. पी. नड्डा, विधायक श्री सुरेश भारद्वाज भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

मोबाइल पर मिलेंगी सूचनाएं

प्रदेश में मोबाइल उपभोक्ताओं को शीघ्र ही एसएमएस 'गेटवे' सेवाओं से लाभान्वित किया जाएगा, जिससे उन्हें विभिन्न विभागों से वांछित सूचनाएं प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश एक पर्यावरण मित्र प्रदेश होने के नाते राज्य में उपलब्ध बहुमूल्य वन सम्पदा के संरक्षण तथा अन्य गतिविधियों पर नजर रखने के उद्देश्य से शीघ्र ही भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईसी) आरम्भ की जाएगी, जिससे राज्य में अवैध पेड़ों के कटान, भू कटान को रोकने में सहायता मिलेगी। इससे 'कैचमेंट एरिया ट्रीटमेंट स्कीम' (कैट) के प्रभाव का मूल्यांकन करने तथा राज्य के लिए अधिक कार्बन क्रेडिट अर्जित करने में भी सहायता मिलेगी।

बेहतर परिवहन सेवाएं प्रदान करेगा निगम

परिवहन मंत्री श्री महेन्द्र सिंह ने शिमला में आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए बताया कि सरकार प्रदेशवासियों को बेहतर परिवहन सेवाएं प्रदान करने के प्रति वचनबद्ध है। उन्होंने बताया कि 300 चालकों को पथ परिवहन निगम द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किए गए, जिनमें से 290 चालकों को नियुक्ति पत्र जारी कर दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि 590 चालकों के पद विज्ञापित किए गए थे जिनमें से 619 ड्राइवरों का पैनल बनाया गया है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने जवाहर लाल नेहरू शहरी नवीकरण योजना के तहत शिमला शहर के लिए 75 बसें स्वीकृत की हैं जिनके लिए 3.04 करोड़ रुपये राज्य सरकार को जारी किए गए हैं। उन्होंने कहा कि इन बसों को चलाने के लिए 123 चालकों की आवश्कता होगी, जिसके लिए नई भर्ती की जाएगी। परिवहन मंत्री ने कहा कि निगम द्वारा 496 परिचालकों के पदों को विज्ञापित किया है, जिसके लिए भर्ती प्रक्रिया प्रगति पर है। उन्होंने बताया कि चालकों तथा परिचालकों के बकाया ओवर टाइम के लिए 1.20 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं तथा शेष 1.20 करोड़ की राशि को शीघ्र ही जारी कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही निगम के बेड़े में 300 नई बसें शामिल की जाएंगी तथा इनकी बॉडी प्रदेश में ही बनाई जाएगी। उन्होंने कहा कि बसों के किराये में बढ़ोतरी नहीं की जाएगी। श्री महेन्द्र सिंह ने कहा कि राज्य में 536 स्थान चिन्हित किए गए हैं जो दुर्घटना के हिसाब से खतरनाक हैं तथा इन स्थानों को लोक निर्माण विभाग के साथ मिलकर ठीक किया जाएगा।

चालकों व परिचालकों को मिलेगा बकाया ओवरटाइम

बड़ू साहिब में 'इटरनल' विश्वविद्यालय

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों सिरमौर जिले के राजगढ़ उपमण्डल में बड़ू साहिब में निजी क्षेत्र के इटरनल विश्वविद्यालय की आधारशिला रखी। मुख्य मंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश निजी भागीदारी के सहयोग से देश का शिक्षा केन्द्र बनकर उभर रहा है तथा प्रदेश में बेहतर शैक्षणिक माहौल उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि देश के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान राज्य में अपने संस्थान खोलने के लिए आगे आ रहे हैं, जिसके लिए प्रदेश सरकार उन्हें पूर्ण सहयोग दे रही है। प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य में लोगों को बेहतर सड़क, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाने के प्रति वचनबद्ध है। मुख्य मंत्री ने कहा कि विश्वविद्यालय का 'नो प्रोफिट नो लोस' का लक्ष्य सराहनीय है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि बेहतर एवं जिम्मेदार नागरिक तैयार करने में विश्वविद्यालय (शेष पृष्ठ 11 पर)

मुख्य मंत्री द्वारा बैंकों से उदार वित्तीय सहायता प्रदान करने का आग्रह

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने हिमाचल प्रदेश में कार्यरत बैंकों से अपील की है कि वे ग्रामीण विकास के लिए ग्रामीण युवाओं में दक्षता उन्नयन, वित्त साक्षरता एवं ऋण परामर्श केन्द्र तथा ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने के लिए सावधिक कार्य योजना तैयार करें। उन्होंने कहा कि बैंकों को समाज के कमजोर वर्गों को उदार वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए। मुख्य मंत्री गत दिनों शिमला में यूको बैंक द्वारा आयोजित 113वें राज्य स्तरीय बैंकर समिति के उद्घाटन समारोह के अवसर पर बोल रहे थे। मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश में बेहतर बैंक नेटवर्क उपलब्ध है, जिससे राज्य में बैंकिंग सेवाओं में और विस्तार होगा। उन्होंने कहा कि बैंकरों को अब नई पहल के साथ ग्रामीण विकास विभाग के सहयोग से ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान एवं सम्बन्धित जिलों में 'अग्रणी बैंक' स्थापित करने के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा तैयार नए माडल के अनुसार प्रत्येक जिले में वित्त साक्षरता एवं ऋण परामर्शी केन्द्र खोलना समय की मांग है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में किसानों की आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए 353 करोड़ रुपये की महत्त्वाकांक्षी पंडित दीन दयाल किसान बागबान समृद्धि योजना लागू की गई है जिसके लिए उन्हें बैंकों द्वारा उदार वित्तीय सहायता की आवश्यकता है।

दस लाख के कृषि बागबानी ऋण के लिए स्टाम्प डियूटी व पंजीकरण शुल्क में छूट

प्रो. धूमल ने कहा कि राज्य सरकार ने दस लाख रुपये तक के कृषि/बागबानी ऋण के लिए स्टाम्प डियूटी व पंजीकरण शुल्क पर छूट प्रदान की है। उन्होंने का कि बैंकों द्वारा ऋण से जुड़ी योजनाओं के (शेष पृष्ठ 11 पर)

चंगर क्षेत्र के विकास के लिए 8.56 करोड़ की योजनाएं

प्रदेश में 80 करोड़ रुपये की लागत की महत्वाकांक्षी अटल बिजली बचत योजना के तहत राज्य के 14 लाख घरेलू उपभोक्ताओं को 70 लाख सीएफएल बल्ब निःशुल्क वितरित किए गए हैं। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने यह जानकारी गत दिनों कांगड़ा जिला के चंगर क्षेत्र के भेड़ी में एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए दी। इससे पूर्व उन्होंने 3.26 करोड़ रुपये की लागत के 33 के.वी सब-स्टेशन भेड़ी जिससे क्षेत्र की 12 ग्राम पंचायतों के 61 गांव को बेहतर बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित होगी तथा भेड़ी-बालकरूपी में 50 लाख रुपये की लागत से बनने वाले सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य 'विश्राम गृह' का शिलान्यास किया।

मुख्य मंत्री ने न्यूगल खड्ड पर 4.06 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित डब्बल लेन मोटरयोग्य पुल का लोकार्पण, जिससे क्षेत्र की 8600 की आबादी लाभान्वित होगी तथा 1.24 करोड़ रुपये से निर्मित दादू-भुलान्दर उठाऊ जलापूर्ति योजना, जिससे क्षेत्र की 72 हेक्टेयर क्षेत्र भूमि व चार गांव लाभान्वित होंगे, का लोकार्पण किया। उन्होंने हिमाचल पथ परिवहन निगम की बस को हरी झण्डी दिखाकर रवाना कर न्यूगल खड्ड पुल का उद्घाटन भी किया। मुख्य मंत्री ने कहा कि भेड़ी स्थित 33 के.वी सब स्टेशन को आगामी वर्ष तक लोगों को समर्पित कर दिया जाएगा, जिससे क्षेत्र में उपभोक्ताओं को बिजली की बेहतर आपूर्ति उपलब्ध होने के साथ-साथ सिंचाई योजनाओं की कार्य प्रणाली में भी सुधार आएगा। उन्होंने कहा कि इस सब स्टेशन के तैयार हो जाने से चंगर क्षेत्र के लोगों को विद्युत की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित होगी।

प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश सरकार ग्रामीण सशक्तिकरण को विशेष प्राथमिकता प्रदान कर रही है तथा प्रदेश सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों को गांवों के उत्थान पर केन्द्रित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि गांवों में लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए गुणात्मक अधोसंरचना सृजित की जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा हाल ही में आरम्भ 353 करोड़ रुपये की महत्वाकांक्षी पंडित दीनदयाल किसान बागवान समृद्धि योजना इस दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि योजना के तहत पॉलीहाउस के निर्माण, टपक एवं फव्वारा सिंचाई सुविधाओं के लिए 80 प्रतिशत उपदान दिया जा रहा है

इससे पूर्व मुख्य मंत्री को न्यूगल खड्ड पर मोटरयोग्य पुल समर्पित करने के लिए महिला मण्डल संधू ने 11 हजार रुपये तथा ग्राम सुधार सभा भेड़ी ने 21 हजार रुपये तथा ग्राम पंचायत डूहक के प्रधान सूबेदार रतन सिंह ने मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए 5100 रुपये का ड्राफ्ट भेंट किया।

जन्माष्टमी पर राजपत्रित अवकाश

हिमाचल प्रदेश सरकार ने 14 अगस्त, 2009 को जन्माष्टमी के अवसर पर सरकारी कर्मचारियों/बोर्ड/कारपोरेशन/शिक्षा संस्थानों के कर्मियों के लिए राजपत्रित अवकाश घोषित किया है। इस दिन दैनिक भोगी कर्मचारियों के लिए भी अवकाश रहेगा लेकिन नेगोशियेबल इंस्ट्रूमेंट एक्ट 1881 की धारा 25 के तहत इसे अवकाश घोषित नहीं किया गया है।

433 बस्तियों को पेयजल प्रदान

सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मंत्री श्री रविन्द्र सिंह रवि की अध्यक्षता में गत दिनों शिमला में विभाग के सभी क्षेत्रीय अधिकारियों के साथ एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम, सिंचाई कार्यक्रम, हैंडपम्प स्थापित करने तथा राज्य में सूखा की स्थिति से निपटने के बारे में किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा की गई। सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश में कार्यक्रम के तहत चालू वित्त वर्ष की प्रथम तिमाही के दौरान 433 बस्तियों को कवर किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अधिक क्षेत्रों को सिंचाई सुविधाओं के अन्तर्गत लाने के प्रयास किए जा रहे हैं और प्रमुख तथा मध्यम, छोटी सिंचाई योजनाओं के लिए क्रमशः 85 करोड़ तथा 137 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा राज्य के 6600 हेक्टेयर क्षेत्र को प्रमुख, मध्यम तथा छोटी सिंचाई योजनाओं के अन्तर्गत लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

श्री रवि ने बताया कि प्रदेश में वर्ष 2008-09 के दौरान 2000 हैंडपम्प स्थापित करने के लक्ष्य के मुकाबले 2188 हैंडपम्प स्थापित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने प्रदेश में चालू वित्त वर्ष के दौरान 2500 हैंडपम्प स्थापित करने की घोषणा की है।

डॉ. कटोच लोक सेवा आयोग के नये सदस्य

डॉ. डी.सी. कटोच ने गत दिनों शिमला में हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण की। आयोग के अध्यक्ष मेजर जनरल (से.नि.) सी.एम. शर्मा ने एक समारोह में उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। लोक सेवा आयोग के सचिव श्री पी.एस. डरैक ने शपथ ग्रहण समारोह की कार्यवाही का संचालन किया। इस अवसर पर मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप, आयोग के सदस्य ब्रिगेडियर (से.नि.) एल.सी. ठाकुर व अन्य उच्च अधिकारी तथा प्रदेश के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। 16 दिसम्बर 1951 को कांगड़ा जिला के पालमपुर क्षेत्र के लाहट में जन्में डॉ. कटोच ने गुरु नानक देव विश्वविद्यालय जालन्धर, पंजाब से बी.एस.सी. करने के उपरांत हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला से गणित में एम.एस.सी. एम.फिल तथा पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

औद्योगिक इकाइयों में हिमाचलियों को 70 प्रतिशत रोजगार देना अनिवार्य

उद्योग, श्रम एवं रोजगार मंत्री श्री किशन कपूर ने कहा है कि प्रदेश में स्थापित होने वाली औद्योगिक एवं जल विद्युत परियोजनाओं में स्थानीय लोगों को 70 प्रतिशत रोजगार प्रदान करना अनिवार्य बनाया गया है। उन्होंने कहा कि इस प्रावधान को निजी क्षेत्र में स्थापित होने वाले शिक्षण एवं स्वास्थ्य संस्थानों में भी लागू किया जाएगा।

श्रम एवं रोजगार विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री कपूर ने कहा कि विभाग श्रमिकों एवं रोजगार की तलाश में युवाओं के कल्याण के लिए कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि श्रम कानूनों को कड़ाई से लागू किया जाएगा, यदि कोई उद्योग इन नियमों की अनदेखी करते पाया गया, उसके विरूद्ध कड़ी कारवाई की जाएगी। श्री कपूर ने कहा कि प्रदेश सरकार श्रमिकों की सुरक्षा के प्रति वचनबद्ध है तथा इसके लिए विभाग द्वारा उन्हें पहचान पत्र दिए जा रहे हैं। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे दस दिन के भीतर ऐसे पहचान पत्र जारी करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे श्रम नियमों का कड़ाई से पालन करें।

उन्होंने स्पष्ट किया कि विभाग में फैक्टरी अधिनियम 1948 प्रावधानों के अनुरूप विभाग में फैक्टरियों के पंजीकरण के लिए अलग से शाखा स्थापित की गई है। उन्होंने कहा कि इस प्रावधान के अनुरूप सरकार ने प्रत्येक औद्योगिक इकाई के लिए स्वयं को पंजीकरण करवाना तथा समय-समय पर इसका नवीनीकरण करना अनिवार्य बनाया है ताकि श्रमिकों के कल्याण एवं सुरक्षा को सुनिश्चित बनाया जा सके।

स्वावलम्बन से सम्पन्नता

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनेक ग्रामीण महिलाएं जिस प्रकार से घर की चार दीवारी से बाहर निकलकर अपने स्वावलम्बन की ओर बढ़ रही हैं, उससे महिलाओं में आत्म विश्वास व आत्म सम्मान की भावना बढ़ी है। ऐसा ही एक अनूठा उदाहरण है, बैजनाथ के साथ लगते गांव उस्तेहड़ की सुमन राणा, जिसने स्वयं को अपने पैरों पर खड़ा करने के साथ-साथ इस क्षेत्र की महिलाओं को इस दिशा में प्रेरित कर स्वावलम्बी बनाने में अहम भूमिका निभाई है।

सुमन राणा में बचपन से ही हर चुनौतियों का डटकर मुकाबला करने की क्षमता विद्यमान थी। घर में आमदनी के सीमित साधन होने के कारण सुमन की शिक्षा केवल माध्यमिक स्तर तक ही सीमित होकर रह गई। विवाहोपरांत भी सुमन को काफी आर्थिक मुसीबतों का सामना करना पड़ा। इनके पति मजदूरी कर परिवार को चलाते थे, जो केवल दो जून की रोटी तक ही सीमित हो पाता था। सुमन ने बचपन में कुल्लू में खड्डी चलाने का कार्य सीखा था और वही अनुभव सुमन के लिए वरदान सिद्ध हुआ।

सुमन खण्ड विकास कार्यालय बैजनाथ में अपना रोजगार आरम्भ करने बारे सरकार द्वारा दी जाने वाली आर्थिक मदद व प्रशिक्षण बारे सलाह लेने पहुंची और उन्हें कार्यालय द्वारा स्वयं सहायता समूह के माध्यम से ऋण व अनुदान प्रदान करने बारे सलाह दी गई। उसके बाद सुमन ने अपने क्षेत्र की 25 बेरोजगार व जरूरमतंद महिलाओं को एकत्रित कर लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह का गठन

किया और बैंक से 4 लाख 35 हजार रुपये का ऋण प्राप्त किया और सुमन ने महिलाओं को उनकी रूचि व सुविधा अनुरूप अपना स्वरोजगार अपनाने के लिए प्रेरित किया। सुमन ने स्वयं 25 हजार रुपये का ऋण लेकर खड्डी स्थापित कर बुनाई का कार्य आरम्भ कर दिया और साथ ही अन्य महिलाओं को भी प्रशिक्षित करना आरम्भ किया।

आज सुमन समाज में सम्मानपूर्वक जीवनयापन कर रही है। अपनी खड्डी में अपना कार्य करने के साथ-साथ विकास खण्ड द्वारा प्रायोजित की गई महिलाओं को भी प्रशिक्षण प्रदान कर रही है जिसके लिए सरकार की ओर से हर माह 50 रुपये प्रति महिला प्रशिक्षण देने और प्राशिक्षण प्राप्त करने वाली महिलाओं को हर माह 100 रुपये प्रति महिला वजीफा दिया जा रहा है। सुमन अपनी खड्डी पर हर माह लगभग 8000 रुपये कमा लेती है जिससे परिवार का खर्च निकाल कर लगभग 3000 रुपये की बचत भी हो जाती है। सुमन अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा भी प्रदान करवा रही है। इसके अतिरिक्त सुमन द्वारा समय-समय पर अपने समूह की महिलाओं के उत्पादों को विभिन्न मेलों के दौरान स्टॉलों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है जिससे उनकी बिक्री में आशानुकूल वृद्धि हुई है।

–बी.आर. चौहान

सड़क नेटवर्क ने खोले समृद्धि के द्वार

हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों के विकास में जीवन रेखाएं समझी जाने वाली सड़कें, प्रदेश में यातायात का एक प्रमुख साधन हैं। प्रदेश सरकार विकास में सड़कों के अहम महत्व को ध्यान में रखते हुए गांव-गांव को सड़क मार्ग से जोड़ने तथा सम्पर्क सड़क सुविधा के विस्तार को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान कर रही है। इस कार्य को गति प्रदान करने में आधुनिक मशीनरी व प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है। इससे राज्य में सड़क निर्माण परियोजनाओं को गति मिली है।

प्रदेश की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के चलते राज्य के 17,449 गांवों में से अधिकतर गांव ऐसी पहाड़ी ढलानों एवं दुर्गम क्षेत्रों में स्थित हैं, जिन्हें सम्पर्क मार्ग से जोड़ना किसी चुनौती से कम नहीं है। प्रदेश में फल, सब्जी एवं खाद्यान्न उत्पादन वाले क्षेत्रों से स्थानीय उत्पाद को मंडियों तक पहुंचाने में सड़कों के महत्व को कमतर नहीं आंका जा सकता। इसीलिए प्रदेश सरकार राज्य में सड़कों एवं पुलों के निर्माण को विशेष प्राथमिकता प्रदान कर रही है।

प्रदेश में सड़क सम्पर्क के क्षेत्र में किए जा रहे सराहनीय प्रयासों का ही परिणाम है कि आज राज्य में सड़कों की कुल लम्बाई बढ़कर 30 हजार किलोमीटर तक पहुंच गई है। प्रदेश सरकार का प्रयास है कि राज्य के सभी गांवों को शीघ्र सम्पर्क सड़क सुविधा से जोड़ा जाए। प्रदेश सरकार ने एक योजना तैयार की है जिसके तहत राज्य के 250 तक की आबादी वाले सभी गांवों को वर्ष 2012 तक बारहमासी सड़क सुविधा से जोड़ा जाएगा। प्रदेश में गत डेढ़ वर्ष के दौरान 2768 किलोमीटर लम्बी नई मोटर योग्य सड़कों का निर्माण किया गया है। इसके अतिरिक्त 3647 किलोमीटर में क्रॉस ड्रेनेज सुविधा, 1504 किलोमीटर लम्बी सड़कों की टारिंग करने के साथ-साथ 2167 किलोमीटर लम्बी सड़कों की वार्षिक सरफेसिंग का कार्य भी सम्पन्न किया गया। राज्य में 1 जनवरी, 2008 से 30 जून, 2009 तक की अवधि के दौरान लगभग 532 गांवों को सम्पर्क सड़क सुविधा उपलब्ध करवाई गई। अभी हाल ही में शिमला ज़िला के दुर्गम क्षेत्र डोडरा-कवार में 61 किलोमीटर लरोट-कवार सड़क का शुभारम्भ कर क्षेत्र को शेष दुनिया से जोड़ा गया है।

प्रदेश में चालू वित्त वर्ष के दौरान विभिन्न योजनाओं के तहत सड़कों एवं पुलों के निर्माण पर 1280 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं। इसमें से 479.60 करोड़ रुपये प्रदेश सरकार, 400 करोड़ रुपये प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना/विश्व बैंक परियोजना तथा 400 करोड़ रुपये राज्य सड़क योजना के तहत राज्य उच्च मार्गों तथा प्रमुख ज़िला मार्गों को स्तरोन्नत करने एवं आवधिक नवींकरण के कार्य पर खर्च किए जा रहे हैं।

प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों को सड़क सुविधा से जोड़ने के कार्य में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस योजनाा के तहत राज्य में 250 से अधिक आबादी वाले सभी गांवों को बारहमासी सड़क सुविधा से जोड़ा जा रहा है। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के तहत स्वीकृत 2146 करोड़ रुपये में से 1213 करोड़ रूपये सड़कों के निर्माण पर खर्च करके 2731 गांवों को सम्पर्क सड़क सुविधा उपलब्ध करवा दी गई है। भारत सरकार द्वारा वर्तमान सड़कों को स्तरोन्नत करने तथा नई सड़क परियोजनाओं का निर्माण कार्य समयबद्ध तरीके से पूरा करने के उद्देश्य से तैयार की गई भारत निर्माण योजना के तहत अप-ग्रेडेशन कम्पोनेंट के अन्तर्गत 522 करोड़ रुपये की लागत की 262 सड़कों को स्वीकृति प्रदान की गई है।

प्रदेश में सड़क निर्माण क्षेत्र में नाबार्ड द्वारा विभिन्न सड़क परियोजनाओं को वित्त पोषित किया जा रहा है। नाबार्ड द्वारा प्रदेश के लिए अब तक 621 सड़क परियोजनाओं तथा 186 पुल परियोजनाओं को वित्त पोषण की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है। प्रदेश के लिए स्वीकृत इन परियोजनाओं में से 256 सड़क परियोजनाओं तथा 128 पुल परियोजनाओं का कार्य पूर्ण हो चुका है। वर्ष 2008-09 के दौरान प्रदेश में 92 करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं तथा प्रदेश सरकार राज्य के लिए 151 करोड़ रुपये लागत की परियोजनाओं के लिए स्वीकृति प्राप्त करने में कामयाब हुई है। चालू वित्त वर्ष के दौरान नाबार्ड से 300 करोड़ रुपये की नई परियोजनाओं को स्वीकृत कराने लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

प्रदेश के लिए दो और राष्ट्रीय उच्च मार्ग स्वीकृत हो जाने से राज्य में राष्ट्रीय उच्च मार्गों की संख्या बढ़कर 9 हो गई है। प्रदेश के लिए स्वीकृत दो राष्ट्रीय उच्च मार्गों में 91 किलोमीटर लम्बा नगरोटा-रानीताल-देहरा-मुबारकपुर तथा 160.500 किलोमीटर लम्बा पॉवटा-राजबन- शिलाई-मीनस-हाटकोटी शामिल हैं। प्रदेश सरकार ने राज्य के 287 किलोमीटर लम्बे अन्य तीन सड़क मार्गों को राष्ट्रीय उच्च मार्गों के रूप में स्वीकृत करने का मामला भारत सरकार के साथ उठाया है। प्रदेश की राजधानी के लिए विश्वस्तरीय सड़क सुविधा उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय उच्च मार्ग-22 के परवाणु- चम्बाघाट भाग को राष्ट्रीय उच्च मार्ग ऑथोरिटी द्वारा फोरलेन में परिवर्तित किया जा रहा है। प्रदेश सरकार ने राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के मध्य दूरी एवं यात्रा अवधि को कम करने के उद्देश्य से विभिन्न स्थानों पर सुरंगों के निर्माण के लिए एक योजना तैयार की है। राजधानी शिमला के लिए चार सुरंगों के निर्माण का प्रस्ताव है, जिनके निर्माण पर 310 करोड़ रुपये खर्च होंगे। इससे न केवल यात्रा की दूरी कम होगी बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी सहायता मिलेगी।

सूजसवि

प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों के लिए पर्यटन विकास परिषदों का गठन विचाराधीन

हिमाचल प्रदेश सरकार राज्य में पर्यटन प्रोत्साहन गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तैयार टूरिज्म मास्टर प्लान के तहत प्रदेश के प्रमुख पर्यटक स्थलों कुफरी-नालदेहरा, धर्मशाला-मैकलोड़गंज तथा डलहौजी-खजियार के लिए स्थानीय प्रतिनिधियों के सहयोग से पर्यटन विकास परिषदों (टीडीसी) के गठन पर विचार करेगी। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने यह जानकारी गत दिनों शिमला में पर्यटन विकास बोर्ड की तीसरी बैठक को सम्बोधित करते हुए दी।

मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश में अल्पावधि, मध्यावधि तथा दीर्घावधि उपायों के तौर पर मास्टर प्लान तैयार होगा ताकि राज्य में वर्तमान में कुछेक पर्यटक स्थलों पर ही पर्यटकों की बढ़ रही भीड़ को अन्य क्षेत्रों की ओर आकर्षित कर पर्यावरण मित्र, सामाजिक रूप से मान्य तथा रोजगार के साथ पर्यटन को जोड़ने जैसी गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया जा सके।

उन्होंने कहा कि मनाली स्थित पर्यटन विकास परिषद द्वारा प्राप्त वांछित परिणामों को ध्यान में रखते हुए राज्य में स्थानीय लोगों के सहयोग से आवश्यक सभी पहलुओं पर गौर करने के बाद नई पर्यटन विकास परिषदों का गठन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश को लगभग 90 मिलियन यूएस डॉलर की वित्तीय सहायता प्राप्त होने की संभावना है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने पहाड़ी स्थलों के सतत् अधोसंरचना विकास के अन्तर्गत भारत सरकार से 50 करोड़ रुपये के मेगा सर्कट के लिए अलग से एक प्रस्ताव केन्द्र को प्रेषित किया है। इसके अतिरिक्त प्रदेश के शमशी (कुल्लू), मण्डी तथा ऊना में वर्तमान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में आतिथ्य सत्कार कोर्स आरम्भ करने के लिए 8 करोड़ रुपये का प्रस्ताव केन्द्र को प्रेषित किया गया है।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल शिमला में पर्यटन विकास बोर्ड की बैठक की अध्यक्षतता करते हुए

प्रो. धूमल ने कहा कि हिमाचल तथा हरियाणा राज्यों के बीच मेगा सर्कट प्रस्ताव दोनों सरकारों के विचाराधीन है, जिसके तहत पावंटा साहिब-नाहन-रेणुका व सिरमौर के अन्य भाग तथा अम्बाला-जगाधरी- पंचकूला क्षेत्रों को 50 करोड़ रुपये के निवेश के साथ पर्यटन विकास गतिविधियों के लिए विकसित किया जाएगा। इसके अलावा मेगा सर्कट के तहत संयुक्त क्षेत्र में पिंजौर-स्वारघाट सड़क को सिक्स लेन के रूप में निर्मित करने का प्रस्ताव शामिल किया गया है। उन्होंने कहा कि आनन्दपुर साहिब-नयना देवी जी, धर्मकोट-त्रियुंड, भुंतर-बिजली महादेव, पलचान-रोहतांग, पालमपुर-न्यूगल तथा शाहतलाई-दियोट सिद्ध के मध्य बीओटी के आधार पर 'रोप-वे' निर्मित करने के लिए इस वर्ष के अंत तक सभी कानूनी औपचारिकताएं पूरी कर ली जाएंगी। उन्होंने कहा कि राज्य के कुल्लू तथा बद्दी क्षेत्रों में गोल्फ कोर्स स्थापित करने का भी प्रस्ताव है तथा डलहौजी, चम्बा, मनाली, कुल्लू, धर्मशाला, चिंतपूर्णी, बिलासपुर तथा मण्डी में पर्यटकों की सुविधा के लिए बस अड्डों को स्तरोन्नत किया जाएगा।

पर्यटन विकास के लिए मास्टर प्लान तैयार होगा

मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन विकास गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से होम स्टे योजना आरम्भ की गई है ताकि इन ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध करवाएं जा सकें। योजना के तहत पर्यटन विभाग में बड़ी संख्या में लोग होम स्टे योजना इकाइयां स्थापित करने के लिए आगे आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि इससे प्रदेश भ्रमण पर आने वाले सैलानियों को प्रदेश के समृद्ध रीति-रिवाजों, परम्पराओं तथा जीवन शैली के बारे में रू-ब-रू करवाने में सहायता मिलेगी।

मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप ने राज्य के अन्य गैर चिन्हित क्षेत्रों में भी रिवर राफ्टिंग, पैरा ग्लाइडिंग तथा ट्रैकिंग गतिविधियां आरम्भ करने पर बल दिया। उन्होंने पुराने बस अड्डे को शिमला उपायुक्त कार्यालय के साथ जोड़ने की संभावनाओं का पता लगाने पर बल दिया।

सचिव पर्यटन श्रीमती मनीषा नंदा ने मुख्य मंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि प्रदेश में हर वर्ष पर्यटन गतिविधियों का विकास हो रहा है तथा देश-विदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक प्रदेश भ्रमण पर आ रहे हैं। बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रीमती परमिन्द्र माथुर व श्री अवय शुक्ला तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

शिमला में 'बिग 91.9 एफएम' रेडियो स्टेशन खुला

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों शिमला से निजी क्षेत्र में पहले बिग 91.9 एफ.एम. रेडियो स्टेशन का ट्रांसमिशन बटन दबा कर शुभारम्भ किया।

मुख्य मंत्री ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्य में रेडियो लोगों के मनोरंजन एवं सूचना का एक सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि विश्व में लोगों के मनोरंजन एवं सूचना प्रदान करने में रेडियो का गौरवमयी इतिहास रहा है तथा देश में 23 जुलाई, 1927 को उस समय के गवर्नर जनरल लार्ड इरविन ने मुम्बई से पहले रेडियो स्टेशन का शुभारम्भ किया था तथा बाद में 26 जुलाई को कोलकता से रेडियो स्टेशन शुरू हुआ। उन्होंने कहा कि राष्ट्र निर्माण तथा लोगों को विभिन्न कार्यक्रमों एवं अन्य ज्ञानवर्धक जानकारियां उपलब्ध करवाने में रेडियो का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

नार्थ एंड वेस्ट के बिजनैस प्रमुख श्री हिमांशु शेखर ने मुख्य मंत्री का स्वागत करते हुए शिमला से ए.एम. स्टेशन का शुभारम्भ करने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि देश भर में कम्पनी द्वारा 45 एफ.एम. रेडियो स्टेशन संचालित किए जा रहे हैं। कम्पनी के क्षेत्रीय निदेशक श्री सिद्धार्थ भारद्वाज ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा कि एफ.एम. स्टेशन लोगों के मनोरंजन के लिए विभिन्न लोकप्रिय कार्यक्रमों को प्रसारित करेगा।

हिमुडा के उपाध्यक्ष श्री गणेश दत्त, निदेशक सूचना एवं जन सम्पर्क श्री बी. डी. शर्मा तथा नगर के विभिन्न गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

ग्रामीण स्तर पर खेल गतिविधियों को बढ़ावा

हिमाचल प्रदेश सरकार राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में खेल-कूद गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए आधारभूत अधोसंरचना सुदृढ़ करने पर विशेष ध्यान दे रही है। सांसद श्री वीरेन्द्र कश्यप ने यह जानकारी गत दिनों शिमला ज़िले के ठियोग क्षेत्र के जुग्गर में चार दिवसीय खेल-कूद प्रतियोगिता के समापन अवसर पर सम्बोधित करते हुए दी।

श्री कश्यप ने सतोग पंचायत के लिए उठाऊ सिंचाई एवं पेयजल आपूर्ति योजना के लिए पर्याप्त धनराशि उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया। उन्होंने स्कूल परिसर में चारदीवारी के लिए एक लाख रुपये की घोषणा की। उन्होंने ज़िला स्तर पर खेल-कूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने वाले बच्चों को पांच हजार रुपये देने की घोषणा की।

विद्युत परियोजनाओं से मिलेंगे पंचायतों को लाभ

स्थानीय विकास गतिविधियों के लिए प्रथम 12 वर्ष में मिलेगा आय का तीन प्रतिशत

प्रदेश में 100 किलोवाट क्षमता तक की माइक्रो जल विद्युत परियोजनाओं का निष्पादन करने वाले स्वतंत्र ऊर्जा उत्पादकों (आईपीपी) को पहले 12 वर्षों तक अपनी आय का 3 प्रतिशत तथा उसके उपरांत 6 प्रतिशत भाग सम्बन्धित ग्राम पंचायतों को स्थानीय विकासात्मक गतिविधियों के लिए देना होगा। यह निर्णय मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल की अध्यक्षता में गत दिनों शिमला में हिमऊर्जा की समीक्षा बैठक में लिया गया। मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य में लोकतंत्र के निचली निकायों को अधिक शक्तियां प्रदान कर रही हैं ताकि इन क्षेत्रों में विकासात्मक जरूरतों को पूरा करने के लिए आय के साधन सृजित किए जा सकें। उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में स्वतंत्र ऊर्जा निष्पादकों ने परियोजना क्षेत्र के स्थानीय गांवों को नि:शुल्क बिजली उपलब्ध करवाने तथा इन परियोजनाओं से अर्जित आय में से कुछ भाग विकासात्मक गतिविधियों के लिए देने के बारे में सहमति व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्र ऊर्जा उत्पादकों से माइक्रो परियोजनाएं स्थापित करने के लिए कोई अपफ्रंट प्रीमियम नहीं लिया जाएगा तथा परियोजनाएं स्थापित करने के लिए सम्बन्धित ग्राम पंचायत, सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य तथा वन्य प्राणी विभागों से ही अनापत्ति प्रमाण पत्र लेना होगा। ऐसे उत्पादकों को अन्य स्वीकृतियों के लिए छूट दी गई है, जबकि निदेशक ऊर्जा द्वारा तकनीकी आर्थिक स्वीकृति दो महीने के भीतर प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं को स्थापित करने के लिए स्थानीय उद्यमियों को वरीयता दी जाएगी। उन्होंने कहा कि स्वतंत्र ऊर्जा उत्पादकों को हिमऊर्जा के पास 25 हजार रुपये की धरोहर राशि जमा करवानी होगी। प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश में चिन्हित कुल 21 हजार मेगावाट क्षमता में 2000 मेगावाट की कुल लघु जल विद्युत क्षमता शामिल है, जिनमें से 5 मेगावाट तक की कुल 1250 मेगावाट क्षमता की विभिन्न परियोजनाओं को पहले ही आवंटित किया जा चुका है, जिनसे 89.05 मेगावाट क्षमता का उत्पादन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 11वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 363.45 मेगावाट क्षमता की 102 लघु जल विद्युत परियोजनाओं को पावरग्रिड में जोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा कि पांगी घाटी में 900 के.वी. क्षमता की साच तथा लाहौल घाटी में 400 के.वी. क्षमता की बिलिंग परियोजनाओं का निष्पादन इस वर्ष के अंत तक आरम्भ होने की संभावना है, जिससे जनजातीय क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति को सुदृढ़ करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के जनजातीय, दुर्गम तथा दूरस्थ क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति को पूरा करने में मिनी एवं माइक्रो जल विद्युत परियोजनाएं महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। मुख्य मंत्री ने कहा कि सरकार ने 2 मेगावाट क्षमता तक की जल विद्युत परियोजनाओं को हिमाचल प्रदेश के स्थायी निवासियों के लिए आरक्षित किया है, जबकि 5 मेगावाट तक की परियोजनाओं में भी उन्हें प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने ऊर्जा दोहन के लिए एक 'मास्टर प्लान' बनाए जाने की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरण ऊर्जा मंत्रालय द्वारा 'पन चक्कियों' के मालिकों को इन्हें स्तरोन्नत करने के लिए 1.10 लाख रुपये का उपदान प्रदान किया जा रहा है ताकि इन्हें 5 मेगावाट तक ऊर्जा उत्पादन के लिए विकसित किया जा सके। उन्होंने कहा कि सीमा से लगते जिला में 100 किलोवाट तक की जल विद्युत परियोजनाएं निष्पादित करने वाले स्वतंत्र ऊर्जा उत्पादकों को भी एक लाख रुपये उपदान दिया जा रहा है।

दो मेगावाट क्षमता की जलविद्युत परियोजनाएं प्रदेश के स्थायी निवासियों के लिए आरक्षित

उन्होंने कहा कि स्थानीय उद्यमियों को इन प्रोत्साहनों का लाभ लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। प्रधान सचिव एमपीपी एंड पावर श्री सुभाष नेगी ने भी अपने विचार प्रकट किए।

हिमऊर्जा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अजय भंडारी ने बैठक में हिमऊर्जा की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी।

मिट्टी के तेल के व्यापारिक उपयोग को रोकने के लिए उड़न दस्तों द्वारा कड़ी कार्यवाई

खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले मंत्री श्री रमेश धवाला ने गत दिनों बताया कि व्यापारिक उपयोग के लिए मिट्टी तेल के दुरुपयोग को रोकने के लिए विभाग के उड़न दस्तों द्वारा कड़ी कार्यवाही की जा रही है। उन्होंने कहा कि जिन छोटे वाहनों में रसोई गैस के सिलेण्डर लगे पाए जाएंगे, उन पर भी कड़ी कार्यवाही करने के लिए उड़न दस्तों को प्राधिकृत किया गया है, जो पुलिस की मदद लेने के लिए भी सक्षम होंगे। उड़न दस्ते रसोई गैस के दुरुपयोग को रोकने के लिए कार्यवाही कर रहे हैं।

श्री धवाला ने बताया कि विभाग कालाबाजारी रोकने और अनावश्यक महंगाई बढ़ाए जाने की जनहित विरोधी गतिविधियों पर कड़ी कार्यवाही करने के लिए कटिबद्ध है।

'रेडियो टैक्सी' सेवा आरम्भ होगी

पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन विभाग प्रदेश में पर्यटकों की सुविधा के लिए शिमला, मनाली, धर्मशाला, पालमपुर, डलहौजी तथा नाहन जैसे प्रमुख नगरों के लिए परिवहन विभाग के सहयोग से 'रेडियो टैक्सी' सेवा आरम्भ करेगा।

यह जानकारी सचिव पर्यटन श्रीमती मनीषा नंदा ने गत दिनों विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए दी। श्रीमती नंदा ने जिला पर्यटन विकास अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा 'सर्कट एंड डेस्टिनेशन' योजनाओं के तहत वित्त पोषित पर्यटन परियोजनाओं का कार्य निर्धारित समयावधि में पूरा किया जाए।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में होम स्टे योजना काफी लोकप्रिय हो रही है तथा राज्य के जिला पर्यटन विकास कार्यालयों में अब तक प्रदेश में 100 होम स्टे इकाइयां पंजीकृत की गई हैं, जबकि लगभग एक दर्जन इकाइयां पंजीकरण की प्रक्रिया में हैं।

उन्होंने कहा कि विभाग चालू वित्त वर्ष के दौरान प्रशिक्षण कोर्सों का आयोजन करेगा। प्रदेश के भरमौर, शिमला तथा मैकलोडगंज में ट्रैकिंग गाइड तथा 'मांउटेन रेसक्यू' प्रशिक्षण कोर्स तथा पौंग डैम, चमेरा तथा गोबिन्द सागर में 'अडवांस वाटर स्पोर्ट्स' कोर्स, कुल्लू में ब्यास नदी में रिवर राफ्टिंग गाईड प्रशिक्षण कोर्स तथा बंजार, सुजानपुर, ऊना, नाहन तथा सोलन में टूरिस्ट गाईड कोर्स आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा गत वर्ष विभिन्न प्रशिक्षण कोर्सों के माध्यम से 2040 लोगों को प्रशिक्षित किया गया।

होम स्टे योजना के तहत 100 इकाइयां पंजीकृत

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण

पर्यावरण संरक्षण में कारगर वन सरोवर

जो इंसान अपने कार्य को बोझ समझकर करता है, वह उसमें कभी भी सफल नहीं हो सकता। -अज्ञात

बेटी अनमोल

हिमाचल प्रदेश सरकार ने राज्य में 15 जुलाई से 15 अगस्त तक एक माह के लिए 'बेटी अनमोल है', जागरूकता अभियान प्रारम्भ कर एक नई पहल की है। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने 15 जुलाई को राज्य की राजधानी शिमला से जागरूकता वैन को हरी झण्डी दिखाकर इस अभियान का शुभारम्भ किया। यह अभियान घटते लिंग अनुपात को बेहतर करने के उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया है। सरकार ने उन ग्राम पंचायतों को जिनमें कन्याओं का अनुपात अधिक होगा, पांच लाख रुपये की विशेष विकास ग्रांट देने की घोषणा भी की है। हिमाचल प्रदेश में महिला लिंग अनुपात वर्ष 1991 में 976 से कम होकर 2001 में 968 रह गया है। तथा छह वर्ष की आयु वर्ग के बाल लिंग अनुपात में वर्ष 1991 में 951 से कम होकर वर्ष 2001 में 897 रह गई। यह गिरावट उन जिलों में दर्ज की गई जिनकी सीमा पड़ोसी राज्यों से लगती है। ये अच्छे संकेत नहीं है। महिलाओं की घटती संख्या के कारण लिंग अनुपात में पैदा हो रहे असंतुलन को यदि समय रहते दूर नहीं किया गया तो समाज में और भी विकट परिस्थितियां पैदा हो सकती है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को सदियों से समाज में उच्च दर्जा प्रदान किया गया है तथा महिला एवं पुरुष समाज के दो ऐसे महत्वपूर्ण अंग है जिनके बगैर समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हमारी परम्पराएं कहती हैं कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं। भारतीय संविधान में पुरुषों और महिलाओं को समान दर्जा हासिल है। हिमाचल प्रदेश देश के उन राज्यों में से एक है जिसने महिला दर में सुधार लाने के उद्देश्य से भ्रूण परीक्षण पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा रखा है और भ्रूण हत्या को कानूनी अपराध घोषित कर रखा है। प्रदेश में अल्ट्रासाउंड मशीन रखने वालों के लिये पंजीकरण अनिवार्य बनाया गया है। वैसे भी यह कानूनी अपराध है। लिंग जांच करने वाला या फिर करवाने वाला व्यक्ति दोनों सजा के हकदार हैं। इस नियम के तहत तीन वर्ष कैद या फिर 10 हजार रुपये जुर्माने का प्रावधान है। यदि वही व्यक्ति दोबारा अपराध करता है तो नियमों में पांच वर्ष की सजा व 50 हजार रुपये का जुर्माना रखा गया है। वास्तव में भ्रूण परीक्षण की रोकथाम के प्रयास वर्ष 2001 की जनगणना में सामने आए आंकड़ों के बाद और तेज हो गए हैं। समय रहते हम नहीं संभले तो अवश्य ही मानवता के अस्तित्व पर खतरा आन पड़ेगा। महिलाओं का अनुपात प्रति हजार पुरुष कम रहने का कारण भ्रूण हत्या ही है। कन्या भ्रूण हत्या के कारण केवल सामाजिक व धार्मिक ही नहीं, आर्थिक भी रहे हैं। महिलाओं की साक्षरता दर में वृद्धि होने के बावजूद महिलाओं का प्रतिशत कम होना वास्तव में चिंता का विषय है। छह साल तक के बच्चों में लिंग अनुपात पिछले दस वर्षों में तेजी से गिरा है। कारण भ्रूण हत्या ही रहा है। इसका एक बड़ा कारण पुत्र की चाह भी रहा है। संतान के जन्म के लिए स्त्री और पुरुष दोनों ही उत्तरदायी होते हैं। लेकिन आंकड़ें जाहिर करते हैं कि संतति नियमन का बोझ सिर्फ महिलाओं पर ही डाला जा रहा है। जनमानस को इस बारे शिक्षित करने की जरूरत है। ऐसी परिस्थितियों में सभी को मिलकर भ्रूण हत्या रोकने के प्रयास करने होंगे। इनके पीछे सामाजिक मान्यताओं को समझना होगा। सामाजिक मूल्यों और मान्यताओं को बदलने की जरूरत है। इस दिशा में हिमाचल प्रदेश सरकार ने 'बेटी अनमोल है' जागरूकता अभियान प्रारम्भ किया। जनमानस का सहयोग इस अभियान में अपेक्षित है।

हिमाचल प्रदेश के जंगलों में सरकार ने वन सरोवर बनाने के साथ-साथ प्रदेश के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में पीपल व बरगद के पेड़ लगाने की घोषणा की है। वन मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा का जब वन सरोवर बनाना और पीपल-बरगद के पेड़ लगाने का बयान समाचार पत्रों की सुर्खियां बना तो पर्यावरण प्रेमी पुलकित हो उठे। उन्हें लगने लगा है कि अभी भी देर नहीं हुई है। हिमालय बच सकता है यदि सरकार बचाना चाहे। आवश्यकता है तो बस सुदृढ़ इच्छा शक्ति की। घोषणाओं पर अमल होना चाहिए। योजनाओं को फाइलों से बाहर निकाल कर क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

ऐसा नहीं है कि पहले वन सरोवर नहीं थे। हमारे बुजुर्ग, ऋषि मुनियों की सोच इस मामले में दूरदर्शी थी। पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से उन्होंने हर काम को धर्म के छाते के नीचे लाकर समाज को नई दिशा दी थी।

गांव के समीप के जंगलों में लोग छोटे छोटे तालाब बनाया करते थे। मकसद रहता था कि जंगली प्राणी इन तालाबों में इकट्ठा होने वाला वर्षा का पानी पी कर अपनी प्यास बुझाएं। लेकिन ये तालाब वर्षा के पानी से तो भरे ही रहते थे। साथ ही समीप के चश्मे, बावड़ियां आदि को भी रिचार्ज करते रहते थे। कई जगह तो बड़े-बड़े तालाब ऊपर पहाड़ों, जंगलों में बने हैं। आज भी वो वर्ष भर पानी से भरे रहते हैं। कई जगह छोटे छोटे तालाब नष्ट हो गये हैं। जब किसी सार्वजनिक महत्व की चीज की ओर कोई ध्यान नहीं देगा तो वह नष्ट भ्रष्ट तो होगी ही।

किसी समय धनेटा से नादौन सड़क (हमीरपुर जिला में) के दोनों ओर आम के पेड़ बड़ी संख्या में देखे जा सकते थे। सत्तर के दशक तक ये आम के पेड़ बड़ी संख्या में थे। कहा जाता था कि रियासत काल में नादौन के राजा ने इन पेड़ों को लगवाया था। लेकिन आधुनिकता की दौड़ में अब वही आम के पेड़ कट चुके हैं। ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हमें अपने आस पास देखने को मिलते हैं।

बात वन सरोवर की हो रही हो तो पूरी इच्छा शक्ति से उन्हें बनवाए। हर पंचायत में कम से कम एक बड़ा सरोवर जितने जल्दी हो बन जाना चाहिए। केवल घोषणाओं से ये सरोवर नहीं बनेंगे। यदि नरेगा के तहत भी बनवाने पड़े तो भी बनवा लिए जाने चाहिए। लोगों को काम भी मिलेगा और सरोवर भी बन कर तैयार हो जायेंगे। इसी तरह हर गांव में एक छोटा सरोवर बना लिया जाना चाहिए। वर्षा का पानी इनमें इकट्ठा होगा तो काम आयेगा। आसपास के पेड़ हरे भरे रहेंगे। पशुओं, जानवरों को पानी उपलब्ध रहेगा। पर्यावरण सुरक्षित रहेगा।

वन सरोवर तो हमारे साहित्यिक ग्रंथों में विशेष स्थान प्राप्त किये हुए है। ऋषि-मुनियों के आश्रमों के समीप ऐसे वन सरोवरों तथा घने जंगलों का वर्णन मिल जायेगा।

जहां तक सरकार की पीपल और बरगद के पेड़ लगवाने की बात है तो यह भी एक सराहनीय योजना है। धार्मिक ग्रंथों में लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी वृद्धावस्था में पीपल और बरगद का पेड़ लगाए तो उसके जीवन भर के पाप खत्म हो जाते हैं। यह भी कहा गया है कि जब तक वह व्यक्ति जीवित रहे तब तक अपने लगाए पीपल और बरगद के पेड़ की रक्षा करे। उन्हें नुकसान नहीं पहुंचने दे।

पीपल और बरगद के पेड़ तो ऐसे हैं कि ये चट्टानों-पत्थरों पर उग जाते हैं। घरों की पक्की दीवारों पर उग आते हैं। इन पेड़ों पर लगने वाले फलों को जब कौवे व दूसरे पक्षी खाते हैं तो बीट के द्वारा उनके बीजों को आगे से आगे पहुंचाने व उगाने में मदद करते हैं। ऐसे में प्रदेश सरकार द्वारा घोषित की गई यह बहुद्देशीय योजना पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगी।

नगर परिषदों, नगर पंचायतों, महिला मण्डलों, अन्य समाज सेवी संस्थाओं तथा प्रशासनिक अधिकारियों को जब राष्ट्र भक्ति की भावना से 'वन सरोवर बनाना पीपल बरगद लगाना' जैसी योजना से जुड़ने का अहसास होगा तो परिणाम भी सुखद होगा।

लोगों को इस काम में लगाना ही किसी भी दमदार नेता के नेतृत्व की सच्ची पहचान होगी। आज लोग सरकारी जमीन हथिया कर वहां पक्के बड़े आलीशान अवैध भवन बनाने में देर नहीं लगा रहे हैं। रात दिन एक करके तथा मजदूरों को दोगुणी दिहाड़ी देकर भी सरकारी जमीन पर कंकरीट के जंगल खड़े किये जा रहे हैं। यदि ऐसे लोगों से सरकारी भूमि खाली करवाकर वहां पेड़ लगवाए जाएं तो हजारों की संख्या में पेड़ लहलहा उठेंगे। पर्यावरण सुरक्षित होगा। आज शहरों की सरकारी खाली जमीन पर असर रसूख रखने वाले तथा कुछ बाहुबलि कब्जा करके पक्के अवैध भवन बनाकर किराये पर चढ़ा रहे हैं। यहां पेड़ भी तो लगाए जा सकते थे। केवल वन मंत्री द्वारा वन सरोवर बनाना तथा पीपल बरगद लगाने की घोषणा कर देने मात्र से तो यह काम नहीं हो पायेगा। अभी भी बहुत नहीं बिगड़ा है। हां, कुछ तो जरूर बिगड़ा है।

अच्छे कानून बनाने की अपेक्षा अच्छा अधिकारी समाज की धरोहर होती है। क्योंकि कायदे-कानून चाहे कितने भी अच्छे क्यों न हों यदि उन पर अमल करवाने के लिए अधिकारी अच्छे नहीं होंगे तो काम नहीं चलेगा। अच्छे अधिकारी ही समाज को अच्छा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आज पहाड़ नंगे हो गये हैं। जंगल सूख गये हैं और जो बचे हैं वो धू-धूकर जल रहे हैं। जंगलों के आसपास रहने वाले घास के लालच में जंगल जला डालते हैं। इससे वन्य प्राणियों का जो नुकसान होता है वह तो होता ही है लेकिन हमारा वायुमण्डल भी बेहद गर्म होकर ऋतु चक्र गड़बड़ाने लगा है। वन सरोवर बनेंगे तो समीप के जंगलों की आग बुझाने में भी सहायक होंगे।

आज चाहे सरकार वन सरोवर कहे लेकिन यही वन सरोवर कुछ दशक पहले पोखर व स्थानीय लोगों की भाषा में पूखर कहे जाते थे। हिमाचल प्रदेश स्वास्थ्य विभाग से सेवानिवृत्त उपनिदेशक डॉक्टर प्रेम पूनक का कहना है कि आधुनिकता की अंधी दौड़ ने हम विनाश को नहीं बल्कि महाविनाश को निमंत्रण दे रहे हैं। वे कहते हैं कि पर्यावरण संतुलन बिगाड़ कर विनाश को निमंत्रण लोग ही दे रहे हैं। लोग पेड़ तो काट रहे हैं। जंगलों को तो जला रहे हैं लेकिन नये पेड़ लगा नहीं रहे हैं। जंगल जलने से पहाड़ नंगे हो रहे हैं। कीमती व दुर्लभ जड़ी-बूटियां तक खत्म हो चली है।

पीपल एक ऐसा पेड़ है जो रात को भी ऑक्सीजन देता है। पीपल बरगद जहां होते हैं वहां घनी छाया होती है। थके हारे लोग व पशु आदि इसकी छाया में आराम कर लेते हैं। ऐसे पेड़ अधिक से अधिक संख्या में लगाने चाहिए। इससे पर्यावरण की सुरक्षा में मदद मिलेगी। जो वायुमण्डल जहरीली गैसों से दूषित हो रहा है उसे इन पेड़ों की हवा शुद्ध कर सकने में सहायक सिद्ध होगी।

स्कूलों के पाठ्यक्रम इस तरह से बनने चाहिए कि उनमें पर्यावरण सुरक्षा को विशेष महत्व दिया गया हो। स्कूली बालक प्रेक्टिकल करके बताएं कि फलां स्थान पर फलां पेड़ उसने लगाया है। अध्यापक उसके काम का मूल्यांकन करें। अध्यापकों के सेमिनारों की विषय वस्तु पर्यावरण सुरक्षा पर आधारित होनी चाहिए। स्कूल प्रचार प्रसार के अच्छे माध्यम हो सकते हैं। कोई एक जरूरी बात स्कूल में बच्चों को बता दी जायें। फिर देखो कैसे यह बात घर-घर नहीं पहुंचती है।

दूसरे विश्व युद्ध में जापान के दो बड़े शहरों हिरोशिमा व नागासाकी को बमों से तबाह कर दिया गया था। लेकिन जापानियों ने उन शहरों को थोड़े ही वर्षों बाद एक बार फिर हरा-भरा कर दिया था। बड़े बड़े पौधे उखाड़ कर उन शहरों में लगाये गये। और जापानी नागरिकों की देश भक्ति के कारण वो शहर एक बार फिर हरे भरे हो गये।

हमारे देश में भी यह सब हो सकता है। हमें एक बार फिर पोखर कल्चर की तरफ लौटना होगा। जितने शीघ्र ऐसा कर लेंगे उतने जल्दी फायदा होगा। हम विनाश से बच सकेंगे। हमने जरूरत से अधिक प्राकृतिक साधनों का उपयोग कर लिया है। यूं कहें कि प्रकृति का दिल दुखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। पहाड़ नंगे कर दिये हैं। पेड़ों को तो काटा ही है झाड़ियां तक जला डाली हैं। ये झाड़ियां मैंहदू, बहना, बसूटी, बेर, गुरेन आदि की होती है। कहां रही हैं अब वो? झाड़ियां का अपना अलग महत्व होता है। ये भूस्खलन को रोकती हैं। पहाड़ जब नंगे होंगे तो बरसात के दिनों में वो भूस्खलन से गिरेंगे। चट्टाने फिसलेंगी। बाढ़ आयेंगी तो भूमि कट कर बहेगी ही बहेगी।

इसलिए वन सरोवर बनाना पीपल बरगद लगाना एक जन आंदोलन बनाना होगा। सरकारी भूमि पर कुकरमुत्तों की तरह उग रहे कंकरीट के जंगलों को हटाना पड़ेगा। फलदार व छायादार पेड़ लगाने होंगे। वनों में भी आम, पीपल बरगद, लोकाठ, आंवला, अमरूद, शहतूत आदि लगाने होंगे। ताकि जंगजल जानवर भी प्राकृतिक यप से अपना भोजन प्राप्त कर सकें। वो आबादी की तरफ नहीं बढ़ेंगे।

हमें पुरानी बावड़ियों को भी साफ सुथरा करके काम में लाना चाहिए। बिना देखभाल व रखरखाव के ये पुरानी बावड़ियां खत्म होने लगी हैं।

जनराय
कुलदीप चन्देल

> जहां तक सरकार की पीपल और बरगद के पेड़ लगवाने की बात है तो यह भी एक सराहनीय योजना है। धार्मिक ग्रंथों में लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी वृद्धावस्था में पीपल और बरगद का पेड़ लगाए तो उसके जीवन भर के पाप खत्म हो जाते हैं। ऐसा नहीं है कि पहले वन सरोवर नहीं थे। हमारे बुजुर्ग, ऋषि मुनियों की सोच इस मामले में दूरदर्शी थी। पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से उन्होंने हर काम को धर्म के छाते के नीचे लाकर समाज को नई दिशा दी थी।

घाटों को जिला मुख्यालय से बस द्वारा सीधे जोड़ा जाये

हम गिरिराज के माध्यम से मुख्य मंत्री, परिवहन मंत्री के साथ-साथ परिवहन विभाग के उच्च अधिकारियों का आभार प्रकट करते हैं कि उन्होंने 21वीं सदी में हमारे गांवों के लोगों को बस के दर्शन करवा दिये हैं। गत 26 जून को गनोग बस को घाटों तक भेजा गया। तब से लगातार यह बस नाहन से घाटों तक चल रही है।

परिवहन विभाग के उच्च अधिकारियों से प्रार्थना है कि इस बस को सुबह घाटों से चलाकर सीधा नाहन जिला मुख्यालय से जोड़ा जाये और नाहन से वापिस कम से कम दोपहर बाद तीन बजे चलाकर घाटों भेजा जायें और उसके बाद रेणुका से एक बस ऊपरला रजाणा तक चलाई जाये जो बाऊनल व रजाणा भी कवर करें और घाटों बस सीधी नाहन पहुंचे। इससे उन छोटे वाहनों पर भी लगाम लगेगी जो अवैध रूप से सवारियां ढोते रहते हैं।

समस्त ग्रामवासी घाटों
(संगडाह)

शरत् का देवदास शिमला में

डिजाइन इंडिया की प्रयोगात्मक प्रस्तुति

शिमला के गेयटी थियेटर में गत दिनों प्रसिद्ध बांग्ला उपन्यासकार शरद्चन्द्र चटर्जी के लोकप्रिय उपन्यास देवदास पर आधारित नाटक, अखिल भारतीय रंग एवं कलामंच डिजाइन इंडिया द्वारा प्रस्तुत किया गया। नाटक का आलेख सुविख्यात सिने पटकथा लेखक जगदम्बा प्रसाद दीक्षित द्वारा तैयार किया गया था। भारत में यह पहला अवसर है जब देवदास और उसके साथ के चारित्रिक पात्रों को रंगमंच पर आने का मौका मिला है।

● श्रीनिवास श्रीकांत

राजधानी शिमला ब्रिटिश काल से ही रंगमंच व ललित कला प्रदर्शन से जुड़ा रहा है। नाटक के क्षेत्र में ऐतिहासिक गेयटी थियेटर को रुडयार्ड किपलिंग, सहगल, पृथ्वी राज कपूर, बलराज साहनी व मनोहर सिंह जैसे अभिनेताओं की मेजबानी का अवसर मिलता रहा है। पठान, काबुलीवाला, हत्या एक आकार की, पगला घोड़ा, आषाढ़ का एक दिन जैसे दर्जनों नाटक इस प्रेक्षागृह के मंच पर खेले गये।

शिमला इस दृष्टि से सौभाग्यशाली है कि स्थानीय और बाहर से आये नाटक रसिकों को यह प्रयोगात्मक नाटक देखने को मिला। गेयटी भवन परिसर के जीर्णोद्धार ने थियेटर और अन्य निष्पादन कलाओं की प्रस्तुतियों के लिए निश्चय ही एक उपयुक्त वातावरण तैयार किया है और आशा है कि इसके माध्यम से स्थानीय प्रतिभाओं और इस क्षेत्र में काम कर रही संस्थाओं को विशेष प्रोत्साहन प्राप्त होगा।

देवदास की रचना गत शताब्दी के पहले दशक में हुई थी। यह देश के साहित्य में एक लोकप्रिय प्रेमकथा के रूप में जानी-पहचानी और सराही गई है। इसका फिल्मीकरण तीन बार हुआ। हर बार नायक देवदास के नये किरदार के साथ। सहगल, दिलीप कुमार और हाल ही में अभिनेता शाहरुख खान ने उपन्यास के लीजेण्ड्री नायक को अलग अलग रूपों में अभिनीत किया है। कहना न होगा कि इसमें दिलीप कुमार सर्वश्रेष्ठ थे। बिमल राय की सिनेमेटोग्राफी और एस.डी. बर्मन के संगीत को पुराने दर्शक आज भी नहीं भूल पाये हैं।

गत छह जुलाई को मंचित नाटक के समापन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए इण्डो-अमेरिकन हिन्दी पत्रिका 'अन्यथा' के सम्पादक कृष्ण किशोर की राय में डिजाइन इंडिया द्वारा प्रस्तुत नाटक ने अपनी नये इंटरप्रेटेशन के कारण अपने लिए एक अलग जगह बनाई है। नाटक का श्री दीक्षित द्वारा रुपान्तरण कथा के नये आयामों को उजागर करता है। यह नाटक यूरोप के एंग्रीयंगमैन के आक्रोश और अति यथार्थवाद के अधिक करीब है जो उस समय क्षरित और रूढ़िग्रस्त बांग्ला समाज को उसके सही रूप में रखता है, कुछ इस तरह की वह एक सौ वर्ष के बाद भी आज के समाज की रहनुमाई कर सके। नाटक की कथा मूल रूप से वही है फिर भी आलेख नये समाज की दुश्बारियों को भी परोक्षत: अपने सम्वादों में शामिल करता चलता है। अभिमन्यु पाण्डेय द्वारा नाटक का निर्देशन नये ढंग का है-जर्मन नाटककार बर्टोल्ट बेख्ट के अधिक करीब और मानवीय अस्तित्व में एब्सर्ड नियति के खेल को चरितार्थ करता हुआ।

नाटक में देवदास और वेश्यागृह के दलाल चुन्नी बाबू की भूमिकाएं न सिर्फ अभिनय के स्तर पर बेहतरीन हैं बल्कि गुणमान की दृष्टि से भी कथा में निहित विसंगति व क्रॉस पर्पण की स्थिति को भारतीय रंग-ढंग से पेश करती हैं। देवदास का अभिनय स्वयं अभिमन्यु पाण्डे तथा चुन्नी बाबू का चरित्रांकन गिरिश हरनोट ने एक नये ही मौलिक अंदाज में किया है। ये दोनों बॉलीवुड के कलाकार हैं और अपने फिल्मी कार्य क्षेत्र में स्क्रीन पर अनेक बार अपने अभिनय का प्रदर्शन कर चुके हैं। पार्वती और चन्द्रमुखी की भूमिकाएं चार युवा कत्थक नर्तकियों द्वारा निभाई गयी। कलाचार्य इला पाण्डे की ये शिष्याएं हैं और सभी स्थानीय हैं।

इस नाटक के शिमला में अब तक दो शो हो चुके हैं। एक छह जुलाई को और दूसरा 10 जुलाई की संध्या को गेयटी में ही। स्त्री पात्र पार्वती और चन्द्रमुखी की भूमिकाएं दोनों प्रस्तुतियों के लिए क्रमश: उषा व ऋतिका और स्वाति व प्रभा द्वारा निष्पादित की गयीं। जो मंच पर इनका प्रथम अनुभव होने के बावजूद चरित्रांकन की दृष्टि से बेहतर रहीं। पृष्ठ संगीत कर्णप्रिय, छवि निर्णायक और नाटक की संवेदना को पूरी तरह प्रतिपादित करने वाला था।

प्रज्ञे कोई गीत सुनाओ

ऐसा कोई गीत जगाओ
प्रज्ञे कोई गीत सुनाओ
कल्याणों से स्वस्ति लाकर
तुम अस्ति के घन बरसाओ

मृत्यु का संगी बनकर
मूर्षा ने बांधा जग को
जीवन में संघर्षों की
हांडी में रांधा सबको
सबमें विश्वास जगाने
हेतु सावित्री लाओ

मंत्रों ने स्वप्न दिए हैं
तंत्रों में विघ्न उसारे
सत्यों ने दूरी बांटी
तप ने अनुमान संवारे
मंगल अनुष्ठानों के हित
संकल्पों को दुलराओ

आशीषों की वृष्टि कर दो
मंडप को वर से भर दो
जगती को सुखगृह कर दो
सबको सबका प्रिय वर दो
उपनिषदों का चिंतन देकर
धरती को धन्य बनाओ
प्रज्ञे कोई गीत सुनाओ।

▸▸ डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत

क्या आप जानते हैं?

सर्जरी के घाव सुखाएगी कार्बन डाईऑक्साइड

ऑपरेशन के बाद घाव को सुखाने व उसे इंफेक्शन से बचाने के लिए एंटीबॉयोटिक दवाओं का इस्तेमाल किया जाता है, पर 'मेडिकल हाइपोथिसिस' नामक मेडिकल जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार ऑप्रेशन के घावों पर कार्बन डाईऑक्साइड गैस का इस्तेमाल करने से शरीर के उस हिस्से को हवा के जरिये लगने वाले बैक्टीरियल इंफेक्शन से बचाया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने परिक्षणों में पाया कि नम कार्बन डाईऑक्साइड घाव को गर्म व नम भी रखती है, जिससे टिश्युओं की क्षति में कमी आती है और घाव ठीक होने की प्रक्रिया भी तेज हो जाती है।

1. इंडियन प्रीमियर लीग-2 (आईपीएल-2) टूर्नामेंट में कौन सी टीम विजेता रही?
2. कौन से दर्रे से होकर भारत व चीन के मध्य व्यापार प्रतिवर्ष इन दिनों संचालित होता है?
3. रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया का राष्ट्रीयकरण कब हुआ था?
4. असहयोग आंदोलन के दौर में अलीगढ़ में किस राष्ट्रीय शिक्षा संस्था को स्थापित किया गया था?
5. चांद पर कदम रखने वाला पहला व्यक्ति कौन था?
6. एनएसजी का पहला क्षेत्रीय कार्यालय कहां खोला गया है?
7. 'कम आउट एण्ड प्ले' किसका नारा है?
8. भारत में कौन सा रेलवे जोन सबसे छोटा है?
9. पेनीसिलीन की खोज किस वैज्ञानिक ने की थी?
10. प्रसिद्ध मोबाइल निर्माता कम्पनी 'नोकिया' किस देश की है?
11. अवकाश प्राप्त आर्मी चीफ जनरल जे.जे. सिंह को किस राज्य का गवर्नर नियुक्त किया गया है?
12. विश्व का सबसे ऊंचा जलप्रपात ऐंजिल किस देश में है?
13. किस अंग्रेज गवर्नर जनरल ने भारतीय स्मारकों के संरक्षण में रुचि ली?
14. किन्नौर जिला बनने से पहले क्या था?
15. डांडरा आंदोलन कब और कहां हुआ था?
16. खीरगंगा नामक गर्म पानी का चश्मा कौन से जिले में है?

प्रस्तुति-शमा राणा

□□□

उत्तर-1. डेक्कन चार्जर्स, 2. नाथू ला, 3. सन् 1949 में, 4. जामिया मिलिया इस्लामिया, 5. नील आर्मस्ट्रांग, 6. मुम्बई, 7. 2010 में आयोजित होने वाली राष्ट्रमण्डल खेलों का, 8. उत्तर-पूर्व सीमांत, 9. अलेक्जेंडर फ्लेमिंग, 10. फिनलैण्ड, 11. अरुणाचल प्रदेश, 12. वेनेजुएला (दक्षिण अफ्रीका), 13. लॉर्ड कर्जन, 14. चीनी तहसील, 15. सन् 1930, बिलासपुर, 16. कुल्लू।

कहानी

पछतावा

● डॉ. किशोरी लाल शर्मा

बाजार लोगों से भरा हुआ था। कल त्योहार है लोग खरीददारी में व्यस्त हैं। त्योहार के उल्लास में उल्लासित सभी आवश्यकता का सामान लेने में मग्न थे। अचानक बीच बाजार में एक धमाका होता है। कई लोगों के शरीरों के अंग हवा में उछल कर चारों ओर फैल गये। हर तरफ चीख, पुकार भाग दौड़ मच गई। अफरातफरी का माहौल हो गया। बदहवास में लोग भाग रहे थे। अनेकों घायल लोग कराह रहे थे। एम्बूलैंस व पुलिस के सायरन से मार्कीट गूंज उठी। घायलों को अस्पताल ले जाया गया। लाशों को भी शिनाख्त के लिए अस्पताल में रखा गया था। घायलों की सहायता के लिए लोग आने लगे। अस्तपाल में लोगों की भीड़ जमा हो गई। घायलों को लोग अपना खून देने के लिए लाइन में लगने वाले सभी घायलों को खून चढ़ाया जाने लगा।

एक घायल जो अन्य घायलों के बीच में था, उसका काफी खून बह गया था। उसका खून राधा के खून से मिल गया। उसकी बढ़ी हुई दाढ़ी और लम्बे बाल थे। पीड़ा की व्याकुलता चेहरे पर झलक रही थी। राधा को उसके समीप दूसरी चारपाई पर लिटा दिया गया। उसका खून दाढ़ी वाले को चढ़ाया गया। धीरे-धीरे उसके शरीर में राधा का खून प्रवाहित होने लगा और उसके शरीर में जान आई। वह पत्थराई निगाहों से उसकी ओर देख रहा था।

राधा के मन में आत्म संतुष्टि का भाव था कि उसके खून से किसी का जीवन बच गया परन्तु किसी को भी यह मालूम नहीं था कि राधा का खून जिसको मिला वह एक आतंकवादी था जो अपने रखे बम से स्वयं ही घायल हो गया था। राधा भी इस बात से अनजान थी कि उसके खून से किसी आतंकवादी का जीवन बच रहा है। उसे केवल इस बम की संतुष्टि थी कि जिस अनजान घायल को उसने खून दिया वह बच गया।

वह आतंकवादी अपने चारों ओर देख रहा था। सभी लोग घायलों की सेवा में लगे हुए थे। कोई किसी को खून दे रहा था कि कोई दवाइयां तथा अन्य सहायता कर रहे थे बिना किसी भेदभाव के।

राधा उसे खून देकर अन्य घायलों का हाल पूछती हुई यथा संभव सहायता करती हुई आगे बढ़ती रही। अंत में वह वहां पहुंची जहां शिनाख्त के लिए लाशें रखी गई थीं। पहली लाश को देखते ही वह चीख मारकर बेहोश हो गई। लोगों ने उसके मुंह पर पानी छिड़कर उसे होश में लाया। वह लाख उसके जवान बेटे की थी जिसके शरीर का आधा भाग बम धमाके से उड़ गया था। घर से उसका बेटा बाहर गया हुआ था हर रोज की तरह। उसे नहीं मालूम था कि वह उस मनहूस जगह गया था जहां पर उस आतंकवादी ने बम का धमाका किया, जिसे वह अभी अपना खून देकर आई थी। उसकी दुनिया उजड़ गई। उसके बुढ़ापे का एकमात्र सहारा छिन गया। वह बार-बार बेहोश हो रही थी। डॉक्टर उसे बचाने की कोशिश करने लगे। लोग उसे संभालने लगे परन्तु वह यह सदमा बर्दाश्त न कर सकी और दिल का दौरा पड़ने से वह चल बसी।

वह घायल आतंकवादी अपनी चारपाई पर पड़ा यह दृश्य देख रहा था। थोड़ी देर में राधा के रिश्तेदार आये और उन दोनों की लाशों को उठाकर उस आतंकवादी की चारपाई के पास से गुजरते हुए ले गये।

वह दूर तक उन्हें ले जाते हुए देखता रहा जब तक वह उसकी आंखों से ओझल नहीं हो गये। सहसा उसकी आंखों से एक अविरल अश्रुधारा प्रवहित होने लगी। एक ऐसा पछतावा जो उसके अंतर्मन में बम से निकले किसी छर्रे की तरह ढह गया था। उसका मन अंतर्वेदना से अंदर ही अंदर चित्कार मार रहा था, दहाड़े मार-मार कर रो रहा था। मगर वह प्रकट नहीं कर सकता था। आसपास बैठे लोग उसे सांत्वना दे रहे थे वे समझ रहे थे कि उसके घावों की वेदना असहनीय होने के कारण उसके आंसू प्रवाहित हो रहे हैं। मगर उस वक्त उसके अंतर्मन व्यर्थ को कोई भी नहीं समझ पा रहा था। जो पछतावा उसे हो रहा था उसने उसके मन पर बम से भी ज्यादा असर किया। उस पछतावे ने एक आतंकवादी को मारकर एक इंसान को जन्म दिया।

अमेरिका में हिमाचल दिवस

समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रस्तुतियां

कैलिफोर्निया के सैन फ्रांसिस्को क्षेत्र में रहने वाले स्थानीय हिमाचली लोगों ने गत 14 जून को मिलपीटास के इंडिया कम्युनिटी केन्द्र में हिमाचल दिवस का आयोजन कर हिमाचल की समृद्ध संस्कृति एवं परम्पराओं की एक झांकी प्रस्तुत की। यह पहली बार था जब अमेरिका में रहने वाले हिमाचलियों ने इकट्ठे होकर इतने बड़े पैमाने पर समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में स्थानीय लोगों जिनमें भारतीय तो थे ही व अमेरिकन भी थे, ने बड़े पैमाने पर समारोह में शिरकत की। इस समारोह में लगभग 400 लोगों ने भाग लेकर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लेकर देखा। हिमाचली प्रस्तुतियों को सुना तथा हिमाचली व्यंजनों का लुत्फ उठाया।

समारोह के दौरान हिमाचल की समृद्ध धरोहर जिसमें मंदिर तथा प्रमुख शख्सियतें शामिल थीं, की प्रदर्शनी भी लगाई गई। कुल्लू शाल तथा हिमाचल टोपी भी प्रदर्शनी का आकर्षण थीं जो हाथोहाथ बिक गईं। इस प्रदर्शनी में बिक्री से अर्जित आय को राज्य में गैर–लाभकारी परियोजनों पर व्यय किया जाएगा। इस समारोह के आयोजक महेश निहालपानी जो मूल रूप से शिमला से हैं, ने बताया कि हमारा पहला हिमाचल दिवस समारोह सफल रहा है। हमें प्रसन्नता है कि विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों ने एकजुट होकर इस समारोह का आयोजन किया। समारोह की एक ओर मुख्य आयोजक आशा शर्मा जो शिमला से ही हैं, ने कहा कि मैं आनन्दित हूं। अंतत: 'बे' क्षेत्र की हिमाचली एकदूसरे से जुड़े हैं।

वाशिंगटन डीसी में यूएस सैनेट में पहली बार हिन्दू प्रार्थना करने वाले प्रसिद्ध पंडित राजन जैड इस समारोह के विशेष अतिथि थे, जिन्हें शॉल व हिमाचली टोपी पहनाकर सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि हिमाचल प्रदेश राज्य के निवासियों ने मुझे सम्मानित कर बहुत बड़ा सम्मान दिया है। राजन जैड के शब्दों में भाईचारा, उत्साह तथा सभी ओर समता प्रेरणादायक थी।

नंदिनी शर्मा

इस अवसर पर 'सत्यानन्दन स्टोक्स एन अमेरिकन इन गांधी इंडिया' की लेखिका आशा शर्मा ने स्टोक्स के जीवन पर एक प्रस्तुति भी दी। हालांकि स्टोक्स के जीवन के बारे भारतीयों को पता है लेकिन सांस्कृतिक सीमाओं को पार करने पर इनमें अमेरिका में भी अभिरुचि पैदा हुई है। इस समारोह में सम्पूर्ण हिमाचल का प्रतिनिधित्व था। पालमपुर से सूद परिवार ने हिमाचली गीत तथा क्षेत्र के नृत्य की प्रस्तुति दी। यामिनी मित्र ने चम्बा के लोकगीत तथा उमा चितलापति के नृत्यदल ने क्षेत्रीय नृत्य प्रस्तुत किया। बच्चों ने पारम्परिक वेशभूषा तथा नृत्य कार्यक्रमों में भाग लिया। कोई भी हिमाचली उत्सव बिना नाटी के पूर्ण नहीं होता, इसलिए नीलम मडेक की अगुवाई में नाटी की प्रस्तुति दी गई। नाटी दल के सभी सदस्य हिमाचली थे तथा उन्होंने हिमाचली परिधान चैकर, डाठू तथा शाल पहना था। उत्सव स्थल पर कांगड़ा चित्रकला, पुराने पीतल के पात्र, हस्तशिल्प के उत्पाद जिनमें पूहले, शॉल प्रदर्शित किए गए थे। कुल्लू की टोपियां तथा डाठू भी रखे हुए थे। यहां उपस्थित अधिकांश लोग, उत्सव के दौरान हिमाचल के बारे में तथा नई चीजों के बारे जानकर बहुत प्रसन्न हैं–लोगों को पहली बार समृद्ध सैनिक परम्परा तथा भारतीय सेना में बहुत संख्या में सैनिकों बारे भी ज्ञात हुआ। इसके अतिरिक्त यहां स्थित अनेक प्रसिद्ध मंदिरों, अमृता शेरगिल तथा सोभा सिंह जैसे महान कलाकारों की कर्मस्थली, हिमाचली लेखक चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखी गई कहानी 'उसने कहा था' बारे भी जानकारी मिली।

डॉ. मीना पटियाल द्वारा प्रस्तुत हिमाचली प्रश्नोत्तरी में लोगों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। समारोह के दौरान हिमाचली व्यंजनों का लोगों ने लुत्फ लिया। हिमाचल के विभिन्न क्षेत्रों में बनाए जाने वाले व्यंजनों जैसे तिलवाले आलू, राजमाह का मदरा, पोस्ट वाले बबरू, पालक की बड़ीयां, पहाड़ी खिचड़ी तथा केसरी चावल प्रमुख थे।

स्थानीय हिमाचलियों द्वारा कुछ माह पूर्व ही इस समारोह को आयोजित करने का निर्णय लिया गया था। भारतीय सामुदायिक केन्द्र द्वारा यहां अनेक वर्षों से राज्य दिवस आयोजित किए जाते हैं लेकिन पहली बार हिमाचल दिवस आयोजित किया गया।

हालांकि वहां कम ही हिमाचली हैं लेकिन यह पहली बार है कि हिमाचल को भी मंच मिला है। इस समारोह से हिमाचलियों को आपस में एक–दूसरे को जानने का मौका मिला। अब वहां रहने वाले हिमाचलियों ने इसे प्रतिवर्ष आयोजित करने का निर्णय लिया है।

(द ट्रिब्यून ऑन संडे (जून 28, 2009) के परिशिष्ट से साभार)

अनुवाद : **विनोद भारद्वाज**

कुल्लू में भी बहती है एक गंगा

धर्म चन्द यादव

नैसर्गिक सौंदर्य के लिये विख्यात हिमाचल प्रदेश की कुल्लू घाटी को देवभूमि के नाम से भी जाना जाता है। चूंकि घाटी के जहां हर गांव हर कोने में किसी न किसी देवता का मंदिर या स्थान है वहीं अनेक स्थल ऋषि–मुनियों व भगवान के अनेक नामों से भी जुड़े हैं जो देश–विदेश के सैलानियों व श्रद्धालुओं के लिये आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। ऐसा ही एक तीर्थस्थल है खीर गंगा जो खासकर विदेशी सैलानियों के लिये स्वर्ग से कम नहीं है।

कुल्लू घाटी के एक छोर में स्थित गर्म पानी के लिये प्रसिद्ध मणिकर्ण से लगभग 20–25 किलोमीटर दूर देवदार के घने जंगल में स्थित खीर गंगा का अपना अलग ही आकर्षण है। ऊंचे पहाड़ों की गोद में एक पहाड़ की ढलान पर स्थित खीर गंगा धार्मिक स्थल होने के साथ–साथ पर्वतारोहियों व सैलानियों के लिये काफी महत्त्वपूर्ण स्थल है। अब खीर गंगा का महत्त्व वैसे भी काफी बढ़ गया है क्योंकि एशिया की सबसे बड़ी दूसरी 2051 मेगावाट की पार्वती जलविद्युत परियोजना का मुख्य कार्यस्थल भी खीर गंगा के आसपास ही है। देवदार व चीड़ के सांय–सांय करते वृक्षों से आच्छादित खीरगंगा के रास्ते में वरशैणी, पुलगा, तुलगा, रुद्रनाग आदि अनेक मनोरम स्थल हैं। हालांकि पहले यह सारा रास्ता पैदल था लेकिन अब पार्वती जलविद्युत परियोजना का निर्माण शुरू होने से वरशैणी तक सड़क निकल गई है और चहल–पहल भी बहुत बढ़ गई है। खीर गंगा के पीछे भी एक रोचक, ऐतिहासिक व धार्मिक गाथा जुड़ी है। इस गाथा के अनुसार भगवान शिव व माता पार्वती के दो पुत्र कार्तिकेय व गणेश थे। उन दोनों में अकसर योग्यता के आधार पर एक दूसरे को नीचा दिखाने की होड़ लगी रहती थी। एक बार भगवान शिव ने दोनों पुत्रों को सारी सृष्टि की परिक्रमा करने के लिये कहा, तो दोनों पुत्र परिक्रमा करने चल पड़े। कार्तिकेय तो अपने वाहन मोर पर बैठ कर सृष्टि की परिक्रमा करने निकल पड़े। मगर गणेश के लिये चूहे पर सृष्टि की परिक्रमा करना असंभव था। इसलिए गणेश संशय में पड़ गया कि क्या किया जाये, तब गणेश ने एक युक्ति निकाली और अपने माता–पिता की तीन बार परिक्रमा की और इस तरह से गणेश ने कार्तिकेय से पहले यह प्रतियोगिता जीत ली।

मगर जब कार्तिकेय को वापिस लौटने पर सारी घटना का पता चला तो वह माता–पिता से नाराज होकर दूर पहाड़ों में तपस्या करने चला गया। काफी दिनों तक जब कार्तिकेय वापिस नहीं लौटा तो भगवान शिव व माता पार्वती बेटे की तलाश में निकले। काफी तलाश करने के बाद उन्हें कार्तिकेय घने जंगल में एक पहाड़ की गुफा में तपस्या लीन मिला। कठिन तपस्या करने से कार्तिकेय काफी कमजोर हो गया था। दोनों ने उससे वापिस चलने का आग्रह किया लेकिन कार्तिकेय ने उनके साथ चलने से साफ मना कर दिया। दुखी होकर माता पार्वती ने वहां पर साफ पानी काचश्मा निकाला तो भगवान शिव ने अपना तीसरा नेत्र खोल कर उसे खीर में बदल दिया। ताकि कार्तिकेय भूख प्यास से परेशान न हो।

जनश्रुतियों के मुताबिक कार्तिकेय मणिकर्ण (शेष पृष्ठ 7 पर)

किन्नर देव संस्कृति और हंगो गाँव के डबला देवता

हिमालय पर्वत की बर्फीली चोटियों से घिरा हुआ किन्नौर अपने को आधुनिकता की चकाचौंध से आज भी बचाकर रखे हुए है। यहाँ की संस्कृति हिमालय के अन्य क्षेत्रों से एकदम विपरीत परन्तु मूल्यवान एवं विचारणीय है। यहाँ के सांस्कृतिक जीवन ने देश एवं प्रदेश को ही नहीं, अपितु विदेशी विद्वानों को भी प्रभावित किया हुआ है। जिस प्रकार धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन में सामान्य और विशेष का बहुत कम अन्तर देखा जाता है, उसी प्रकार उनके सामाजिक जीवन में भी समता को प्रतिफलित देखा जा सकता है। इस पूरे क्षेत्र को सतलुज ने दो भागों में बांट रखा है। यदि क्षेत्र की दृष्टि से भी देखें तो इसे ऊपरी किन्नौर और निचले किन्नौर में बांट सकते हैं।

किन्नौर की देव संस्कृति की बात की जाए तो यहाँ तीन प्रकार की संस्कृति देखने को मिलती है – आदिम या बोन धर्म से प्रभावित, ब्राह्मण या हिन्दू धर्म से प्रभावित तथा बौद्ध धर्म से प्रभावित। वर्तमान समय में आदिम या बोन संस्कृति का प्रभाव कम हो गया है। बौद्ध संस्कृति का प्रभाव किन्नौर के ऊपरी क्षेत्र तथा हिन्दू संस्कृति का प्रभाव निचले किन्नौर में अधिक देखने को मिलता है।

प्राचीन काल से ही किन्नर क्षेत्र का सामाजिक जीवन देव व्यवस्था पर आधारित है। इस पूरे क्षेत्र में पाए जाने वाले देवी–देवताओं को मुख्य रूप से दो भागों में बांट सकते हैं – हिन्दू या ब्राह्मण धर्म के अनुसार तथा बौद्ध धर्म के अनुसार। डॉ0 बंशी राम शर्मा ने किन्नौर के देवी–देवताओं को चार भागों में बांटा है[1] – 1. बौद्ध देवता, 2. असुर देवता, 3. वैष्णव धर्म के देवता तथा 4. नाग देवता। हिन्दू धर्म से सम्बन्धित देवता प्राय: निचले किन्नौर में हैं, जबकि बौद्ध धर्म के देवता अधिकाँशत: ऊपरी किन्नौर में पाए जाते हैं। हिन्दू धर्म से सम्बन्धित देवताओं में कुछ देवी–देवता पौराणिक हैं, जिनमें नरेणस(नारायण), विष्णस(विष्णु), मादेव(महादेव) हैं। डॉ0 बंशी राम शर्मा ने इनको वैष्णव धर्म से सम्बन्धित देवताओं की कोटि में रखा है।[2] शोणितपुर(सराहन) के राजा बाणासुर तथा हिरमा(हिडिम्बा) की सन्तानें भी इस क्षेत्र में देवी–देवताओं के रूप में पूजी जाती हैं। हिरमा देवी ने सुंगरा गाँव के पास एक गुफा जिसे गोरबोङ् अग्ग कहा जाता है, में अपने 18 पुत्र–पुत्रियों को जन्म दिया था। इनमें से कुछ के नाम इस प्रकार से हैं – 1. चोण्डिका अथवा कोष्टङ् पी(कोठी देवी), 2. भाबामेशुर(भाबा मेशुर) – भाबा गाँव, 3. सुंगरा मेशुर – सुंगरा गाँव, 4. चगाँव मेशुर – चगाँव गाँव, 5. ऊषा देवी – निचार गाँव, 6. चित्ररेखा – तरण्डा गाँव, 7. नागिन/दुर्गा – छोटा कम्बा, 8. पिरासन देवी – नदपा के पास पानी में, 9. पोर परका – पवारी में, 10. मेबर मेशुर – मेबर गाँव, 11. लाटेच देवी[3] – चगाँव गाँव, 12. बड़ा कम्बा दर्गा या दुर्गा – बड़ा कम्बा गाँव। इनके अतिरिक्त कुछ के नाम प्राप्त नहीं होते। इन सभी भाई–बहनों में चार–पाँच गूँगे तथा बहरे हैं। डॉ0 बंशी राम शर्मा ने हिरमा सहित उनके सभी पुत्र–पुत्रियों की असुर देवताओं के रूप में गिनती की है। हिमाचल के अन्य क्षेत्रों के विपरीत इस पूरे किन्नौर क्षेत्र में नागों को भी देवता के रूप में पूजा जाता है। नाग देवता पूरे किन्नौर में विद्यमान हैं। इनमें बैरिङ् नागस, सापनी नागस तथा चिने नागिन प्रमुख हैं। उपरोक्त सभी देवी–देवता बलि लेते हैं। किन्नौर के ऊपरी क्षेत्र में बौद्ध धर्म का प्रभाव होने के कारण हिन्दू देवी–देवताओं का

डॉ. अश्विनी कुमार

अभाव ही है। इस क्षेत्र में अधिकाँशत: बौद्ध धर्म से सम्बन्धित देवी–देवता हैं। ये देवी–देवता पशु बलि नहीं लेते हैं। इन देवी– देवताओं को तिब्बत से आया हुआ मानते हैं। इनमें देवताओं में डबला, युल्सा, नैदक, जोमातोक, पुरग्युल देव, टुङ्मा, जोङ्चेन, युङ्मा युङ्, लामो तथा देओदुम आदि हैं। इन सब में डबला देवता प्रमुख हैं। डबला देवता महायान धर्म के माने जाते हैं। कानम गाँव में यह मान्यता भी है कि वहाँ के डबला देवता ने काफी बाद में बौद्ध धर्म स्वीकार किया था, पहले वे बौद्ध धर्म के देवता नहीं थे। डबला देवता के नौ भाई बहन माने जाते हैं, जिनमें से छ: भाई इस क्षेत्र में हैं तथा अन्य तिब्बत में बताए जाते हैं। इनमें कानम के डबला को सबसे बड़ा भाई, उनके बाद नमग्या के डबला, पूह के डबला(खङ्मा), खाब के डबला, हंगो के डबला तथा शिपकी के डबला किन्नौर क्षेत्र में हैं तथा अन्य तिब्बत में। हङ्रङ् घाटी में स्पीति नदी के दायीं ओर लियो गाँव पड़ता है। इस लियो गाँव से लगभग 12 कि0 मी0 की दूरी पर हंगो गाँव है। इस गाँव में भी डबला देवता है। यह देवता खुले आकाश के नीचे रहता है। गाँव में इनकी स्थापना शुरगु के पेड़ में है। इस पेड़ के साथ एक छोगतेन अथवा छोसतेन भी है। इसके साथ एक मन्दिर भी है, परन्तु इसमें बुद्ध धर्म की मूर्ति रखी हुई है। इसी गाँव के श्री सोहन लाल नेगी बताते हैं कि इनका एक अस्थान स्पीति के पोह गाँव में भी है। पोह गाँव में भी इन डबला देवता का कोई मन्दिर नहीं है, केवल एक शुरगु अथवा शुप्पा का एक पेड़ है। पेड़ के साथ छोगतेन अथवा छोसतेन भी है जिस पर एक झण्डा लगा हुआ है। यह एक खेत में है। श्री सोहन लाल बताते हैं कि वहाँ के लोग उस शुरगू के पेड़ को कभी नहीं छूते, क्योंकि यदि वे इस पेड़ को छू लें तो उनको देवदोष लगता है। हंगो का डबला देवता दो–तीन साल में एक बार वहाँ जाता था। जब डबला देवता ने पोह जाना होता था तो वह अपने गुर के माध्यम से बताता था कि मैंने पोह में जाना है। जब भी डबला देवता पोह में जाता था तो हंगो गाँव के प्रत्येक घर से एक–एक व्यक्ति देवता के साथ जाता था। देवता के जाने से कोई मना नहीं करता था और न ही कर सकता था। इसके अतिरिक्त देवता का पुजारी तथा उसके बजन्तरी भी साथ जाते थे। वे अपने साथ पोह में देवता के अस्थान पर चढ़ाने के लिए बुद्ध धर्म का झण्डा, खतग तथा नमजे (देवता का कपड़ा विशेष) ले जाते थे। वहाँ पर पहुँचकर साथ गए हुए लोग हलुए का प्रसाद बनाते थे। देवते के साथ गए हुए सभी लोगों के रहने व खाने का प्रबन्ध पोह गाँव के लोग करते थे। दो दिन वहाँ रहने के पश्चात् डबला देवता वहाँ गए हुए लोगों, पुजारी और बजन्तरियों के साथ वापिस आ जाते थे। यहाँ के लोग बताते हैं कि इनकी एक बहन भी है, जो पूह गाँव में रहती है। डबला देवता कभी–कभी वहाँ भी जाते थे। वहाँ पर वे एक ही दिन ठहरते थे। वहाँ भी उनके साथ पुजारी, बजन्तरी और गाँव के लोग जाते थे। उनकी बहन भी दो–तीन साल में एक बार अपने भाई के पास जाती थी। इनकी बहन भी अपने बजन्तरी, पुजारी तथा गाँव वालों के साथ ही हंगो गाँव जाती थी।

गाँव में लोगों द्वारा शादी के अवसर पर बुलाए जाने पर डबला देवता शादी में भी जाते हैं और वहाँ पर हलुवे के द्वारा पूजा करते हैं। किसी के घर पर सन्तान उत्पन्न होने पर भी वहाँ जाते हैं और पूजा करते हैं। डबला देवता टुङ्मा बनाकर (शेष पृष्ठ 7 पर)

यात्रा वृत्तांत

हाटकोटी माता मंदिर दर्शन

कुहेली भट्टाचार्य

अठाईस सितम्बर की रात के 11 बजे पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंची कालका मेल पकड़ने के लिए बच्चे गाड़ी से मेट्रो स्टेशन जनकपुरी वेस्ट छोड़ गए और मैं मेट्रो से पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंच गई। रात के 11 बजे गाड़ी रवाना हुई। मैं अपना सामान 'सेट' करके अपने बर्थ पर बिस्तर बिछाकर सो गई। सुबह 5.15 की जगह 6.30 बजे गाड़ी कालका स्टेशन पहुंची, वहां आशा जी जो कि मेरे साथ हाटकोटी तक जाने वाली हैं, का कोई नामो निशान नहीं था। पूरे स्टेशन का चक्कर लगा चुकी पर आशा जी कहीं नजर नहीं आईं। तीन-चार-पांच बार उनके मोबाइल पर कॉल कर चुकी थी पर उनका मोबाइल नेटवर्क में नहीं था। डेढ़ घण्टे बाद उनका फोन आया कि मैं कालका के रास्ते में हूं, पंचकूला पहुंच चुकी हूं। एक घण्टे में कालका पहुंच जाऊंगी तुम छोटी ट्रेन की टिकट ले लो। फिर मैं नाश्ता करने के लिए कैण्टिन चली गई। नाश्ता करके स्टेशन के दो-तीन चक्कर लगा के जब वेटिंग रूम में आई तो सवा घण्टा और निकल गया था। फिर कुछ देर बाद आशा जी पहुंच गई। करीब 6 घण्टे के सफर के बाद हम शिमला पहुंच गए। रास्ते में छोटी-छोटी जगह, छोटा-सा स्टेशन और खूबसूरत नजारे देखते- देखते हम कब शिमला पहुंच गए पता ही नहीं चला। दिल्ली में इस समय गर्मी थी, शिमला पहुंचते ही सर्दी लगने लगी। स्टेशन मैनेजर ने अनुरोध करने पर हमें कमरा उपलब्ध करवा दिया। रात को शिमला स्टेशन पर खाने को कुछ भी नहीं मिलता। 6 बजे शाम को कैण्टिन बन्द हो जाती है। शिमला में पैदल खूब चलना पड़ता है, क्योंकि गरम पानी से नहाने के बाद इतनी तेज भूख लगी कि हमें बस अड्डे तक जाना ही पड़ा। वापिस आकर रजाई ओढ़कर इतनी गहरी नींद में डूब गई कि सुबह की चहल-पहल से ही नींद टूटी। कल रात का सुनसान स्टेशन अब बिल्कुल बदल गया। बच्चों की किलकारियां, लोगों की आवाजें, गाड़ी की 'विसलिंग', पूरे स्टेशन पर रौनक छा गई थी।

नहा-धो कर, फ्रेश होकर हम नीचे उतर आए। कैण्टिन में नाश्ता करके हम जल्दी-जल्दी स्टेशन से ऊपर आ गए। पहाड़ का रास्ता, हर कदम पर चढ़ाई-उतराई सर्दी रहते हुए भी, थकावट कम नहीं होती। रामपुर की बस पकड़ने के लिए हमने जल्दी-जल्दी पैर चलाए। लक्कड़ बाजार पहुंच कर आशा जी टिकट लेने काउंटर पर चली गईं और मैं रामपुर की बस देखने लगी। आशा जी के वापस आते ही रामपुर की बस लग गई। बस चलने लगी, धीरे-धीरे हम शिमला छोड़ कर बाहर निकल आए, कुफरी होते हुए हम नारकण्डा पहुंच गए, तब तक काफी समय निकल गया, प्यास लगी थी। बस नारकण्डा रुकते ही हम दोनों बाहर निकल आए, जहां शिमला से भी ज्यादा ठण्ड थी। पानी बहुत ठण्डा था फिर भी हमने पिया, हम चाय की दुकान की तरफ लपके, चाय के प्याले में चुस्की भरते-भरते चारों तरफ के नजारा देखने लगे, बड़ा आनन्द आया। इतने में बस ड्राइवर हॉर्न बजाने लगा। हम बस में बैठ गए।

लोकश्रुति है कि इस मंदिर की स्थापना आदि शंकराचार्य ने की थी। कुछ तो मंदिर स्थापना काल को द्वापर युग तक ले जाते हैं। कहा जाता है कि सिरमौर राजा सोमप्रकाश ने तथा बाद में सन् 1885 में जुब्बल के राजा पदम चंद्र ने मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया था। लोकमत शोणितपुर में हुए श्रीकृष्ण-बाणासुर संग्राम के कुछ अंशों को इस क्षेत्र से भी जोड़ता है।

कुमारसैन होते हुए, हम रामपुर बुशहर पहुंचे, वहां आशा जी का कुछ काम था। हमने सोचा आज रात को यहीं रुक कर कल काम निबटाकर हम रोहड़ू होते हुए हाटकोटी चले जाएंगे रामपुर में कुछ देर तक हम बाजार में घूमे फिर हम सुन्दर स्थल रचोली आ गए जो कि रामपुर से 6 कि.मी. की दूरी पर है। रचोली में हम एक व्यक्ति के घर ठहरे। उनके घर में रहकर बड़ा अच्छा लगा। उनकी बॉलकोनी से सतलुज नदी को निहारने का आनन्द लिया, चारों तरफ हरियाली और पहाड़ और एक पहाड़ के ऊपर स्थित यह आवास अत्यन्त मनोरम।

दूसरे दिन काम निबटा कर हम रोहड़ू के लिए चल पड़े। कुमारसैन तक जाने के बाद पता चला उस तरफ से रास्ता बन्द है और गाड़ी नहीं जा रही है। फिर हम वापस नारकण्डा पहुंचे और वहां से रोहड़ू के लिए बस पकड़ी। उल्टा घुमाऊं रास्ते से चलकर हम बहुत लेट हो चुके थे। सुनसान पहाड़ी तंग रास्ता, दूर-दूर लाइटें बार-बार हमारी बस सामने वाली बस को रास्ता देने के लिए पीछे चलकर दूर तक आ रही थी। उसे पास देकर फिर चलने लगती। गंतव्य की तरफ। जब हम रोहड़ू पहुंचे तो बाजार सुनसान हो चुका था। वहां के लोगों से पूछ कर हम एक जगह खड़े हो गए, जहां से हाटकोटी के लिए बस मिलती है। रात काफी हो चुकी थी। अनजानी जगह दो औरतें क्या किया जाए, हम सोच रहे थे। इतने में एक आदमी भी हमारे साथ खड़ा हो गया। हमने पूछा 'यहां से हाटकोटी के लिए बस जाती है क्या?' उन्होंने कहा 'बस तो नहीं इस समय छोटी गाड़ियां मिलती हैं मैं भी वहीं जाऊंगा। काफी समय खड़े होने के बाद जब गाड़ी नहीं मिली तब हमने पूछा 'यहां ठहरने के लिए कोई सही जगह मिलेगी क्या?' उन्होंने कहा आप लोग चिन्ता न करो कोई सही जगह पर आप लोगों को ठहरा कर मैं अपने रिश्तेदार के घर चला जाऊंगा। उस आदमी ने हमारा सामान भी उठा लिया और हमारे साथ घूम-घूम कर हमें एक लॉज में ठहरा दिया। तीसरी मंजिल पर हमें एक साफ-सुथरा कमरा मिला जहां से नीचे पब्बर नदी का शोर स्पष्ट सुनाई दे रहा था। थके हुए तो थे ही, पता ही नहीं चला कब जैसे गहरी नींद आ गई। भूख तो हम भूल ही चुके थे। दूसरे दिन सुबह 7 बजे दरवाजे खोलने की आवाज से नींद टूटी तो देखा आशा जी बॉलकोनी में खड़ी है और झुककर कुछ देख रही हैं। मुझे जागे हुए देखकर बुलाया। मैं जा कर उनके पास खड़ी हो गई तो देखा कि पब्बर नदी बह रही है और उसके किनारे-किनारे रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। हम जल्दी-जल्दी तैयार होकर नीचे आ गए। रात को ही पैसे बगैरा दे चुके थे। इसलिए सीधे ही बस-स्टॉप की तरफ चल पड़े। वहां से हाटकोटी के लिए बस मिल गई और हम हाटकोटी पहुंच गए। बस स्टैण्ड पर उतर कर एक छोटी सी चाय की दुकान जहां हमने चाय पी फिर मन्दिर की तरफ उतरने लगे। नीचे उतर कर मंदिर प्रांगण के नल में हाथ-पैर धोकर दर्शन की लाइन में खड़े हो गए, छोटी सी लाइन थी। माता के दर्शन करके हमने पंच पाण्डव दर्शन किये। हम घूम कर वापिस आए तब तक मन्दिर के सेक्रेटरी भी घर से आ गए थे। उन्होंने हमें आदरपूर्वक बिठाया गेस्ट-हाउस में किसी को भेजा हमारे लिए कमरे का प्रबंध करने के लिए कहा, तब तक मंदिर के ऑफिस में एक छोटा सा कमरा खुलवा दिया हमारे बैठने के लिए और अपने ही हाथों से चाय बनाकर पिलाई। नवरात्रा होने के कारण गैस्ट हाऊस में हमें कमरा उपलब्ध नहीं हो सका था परन्तु उन सज्जन ने आफिस के कमरे में ही हमारे रहने का प्रबन्ध कर दिया।

लगभग 1.00 बजे वह हमें भण्डारे में ले गए। उनके साथ ही हम पब्बर नदी किनारे चले गए। यहां नदी विशालकाय है, वापिस आकर हम मन्दिर के सामने जहां दुर्गा सप्तशती पाठ चल रहा था, वहीं बैठ गए और इस मन्दिर के बारे में पूछते गए। लोग कहते हैं यहां दो बड़े-बड़े कलश (चरूण) हुआ करते थे लेकिन वर्तमान हमें वहां एक ही कलश जंजीरों से बंधा नजर आया जिसका एक किनारा माता के चरण से बंधा हुआ है, पर पता नहीं चलता। अति पुरातन इस मंदिर में हजारों लोग दर्शनार्थ आते रहते हैं। सुबह हमने बड़े ही आसानी से दर्शन कर लिए थे पर अब नारी-पुरुष की दो अलग-अलग लाइनें आंगन के दो-तीन चक्कर लगा कर बाहर तक पहुंच गई थी। दोपहर के बाद हाटेश्वरी मंदिर परिसर स्थित शिव मंदिर के बारे में पूछा विस्तृत जानकारी ली। लोकश्रुति है कि इस मंदिर की स्थापना आदि शंकराचार्य ने की थी। कुछ तो मंदिर स्थापना काल को द्वापर युग तक ले जाते हैं। कहा जाता है कि सिरमौर राजा सोमप्रकाश ने तथा बाद में सन् 1885 में जुब्बल के राजा पदम चंद्र ने मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया था। लोकमत शोणितपुर में हुए श्रीकृष्ण- बाणासुर संग्राम के कुछ अंशों को इस क्षेत्र से भी जोड़ता है। एक जनश्रुति के अनुसार माता हाटेश्वरी का निवास पहले खरश्याली गांव में सरोवर के समीप एक टिब्बे पर था, देवी की कृपा से खरश्याली धन-धान्य से पूर्ण था। गजयाणी ग्रामवासियों ने देवी को अपने गांव ले जाने के लिए इस सरोवर को किसी नर अथवा गाय की बलि से अपवित्र करने की सोची लेकिन इससे पूर्व ही इस सरोवर का पानी उफनता हुआ पब्बर में जा मिला, माता की मूर्ति भी जल के साथ बहती हुई हाटकोटी तक पहुंची। इन्हीं दिनों राजा विराट के यहां पाण्डव अज्ञातवास में थे। भीम ने मूर्ति को पानी में बहते हुए देखकर उसे पानी से निकालकर यहां हाटकोटी में इसकी स्थापना कर दी। खरश्याली में देवी के उस मूल स्थान पर आज भी देवी की पूजा होती है। मंदिर परिसर स्थित शिव मंदिर, देवी महिषासुर मर्दिनी के मंदिर परिसर में ही शिव का एक अन्य मंदिर भी है। मंदिर में एक विशाल व भव्य शिव लिंग की स्थापना की गई है। यह प्रस्तर लिंग अपने आकार में इतना बड़ा है कि ऐसा अनुमान लगाना सहज लगता है कि इस लिंग की स्थापना के बाद ही इस मंदिर का निर्माण किया गया होगा, अन्यथा इसके संकरे दरवाजे से लिंग गर्भगृह में नहीं लाया जा सकता। इस मंदिर के भीतर रखी अन्य मूर्तियों में उत्कृष्ट कलाकारी के नमूने हैं। मंदिर का द्वार भुज नटराज शिव की आकृति से सजाया गया है और प्रवेश द्वार के सामने चबूतरे पर शिव वाहन नंदी भी खूबसूरती से उकेरा गया है। द्वार भुज के निचले दो कोणों में दो वादक अपने वाद्य यन्त्रों सहित उकेरे गए हैं। द्वार मुख तथा मन्दिर की बाह्य भित्ति पर तराशे गए पत्थरों पर कीर्ति मुख, कमल, पूर्वाहार और हंस के चित्र हैं। मंदिर के भीतर छत पर काष्ठ में अनेक देवी-देवताओं की मूर्ति रूप में अंकित किया गया है। इस मंदिर के गर्भ-गृह में विष्णु गरुड़ासीन लक्ष्मी, दुर्गा, गणेश आदि की भी प्रस्तर मूर्तियां हैं। इन मूर्तियों को देखकर लगता है कि कभी यहां वैष्णव परंपरा भी जरूर रही होगी और शिव मंदिर में इतनी सारी मूर्तियों को देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि सचमुच ही यह स्थान कभी मंदिरों की घाटी रहा होगा। समय के प्रवाह में मंदिर तो अब नहीं रहे लेकिन श्रद्धालु भक्तों ने इन मूर्तियों को तो किसी न किसी रूप में सम्भाल ही लिया। मंदिर के बाईं ओर एक कतार में दिखाई देने वाले शिखराकार पांच मंदिरों के बारे में भी जनश्रुति है कि इन्हें विराट नगर में अपने अज्ञातवास के दौरान पाण्डवों ने खेल ही खेल में बनाया था। बातें करते-करते शाम हो चुकी थी। उसके उपरांत हम पास ही दुकान में पहुंच गए, सर्दी बहुत लग रही थी फिर भी हम बैंच पर बैठ गए। मंदिर परिसर में ही एक शादी हो रही थी। हम बैंच पर बैठे उनका गाना सुन रहे थे। कॉफी का आर्डर दिया। इस लगभग निर्जन प्रांत में भी दिल्ली की जैसी कॉफी का आनंद लिया। मजा आ गया फिर रात को खाने का ऑर्डर कर हम वापस लौटे। दूसरे दिन माता के दर्शन और परिक्रमा करके ऊपर आ गए वहां से काफी ऊपर जाना था, सामान ढोना काफी मुश्किल लग रहा था। पहाड़ी रास्ता था, उतराई पर तो उतर गए पर अब चढ़ाई भारी पड़ रही थी। दिन अभी ठीक तरह से निकला नहीं था। हमने सोचा कोई मिल जाता तो हमें ऊपर तक पहुंचा देते, अच्छा था पर कोई नज़र नहीं आ रहे थे। इतने में दो लोग नीचे से ऊपर आते ही हमने पूछा भैया हमें थोड़ा मदद कर दोगे। फिर उन्होंने हमारा बैग उठा लिया। हम ऊपर तक आ कर बस के इन्तजार में स्टैण्ड पर बैठ गए। हाटकोटी जाने के लिए शिमला से सीधा रास्ता, खड़ा पत्थर से होते हुए जाता है जो लगभग एक कि.मी. पड़ता है।

मंदिर परिसर स्थित शिव मंदिर, देवी महिषासुर मर्दिनी के मंदिर परिसर में ही शिव का एक अन्य मंदिर भी है। मंदिर में एक विशाल व भव्य शिव लिंग की स्थापना की गई है। यह प्रस्तर लिंग अपने आकार में इतना बड़ा है कि ऐसा अनुमान लगाना सहज लगता है कि इस लिंग की स्थापना के बाद ही इस मंदिर का निर्माण किया गया होगा।

कुल्लू में भी बहती है...

(पृष्ठ 6 का शेष) घाटी के दुर्गम पहाड़ में तपस्या करने आये थे। कालांतर में इसी का नाम खीर गंगा पड़ा। मगर समय के साथ- साथ खीर गर्म दूध में बदल गई और अंततः अब वहां पर गर्म व दुधिया पानी के चश्मे ही रह गये हैं। मगर श्रद्धालुओं व जिज्ञासुओं के लिये इस स्थान का महत्त्व आज भी कम नहीं हुआ है। अब खीर गंगा में एक मंदिर बना दिया गया है और रहने के लिये सराय भवन भी बनाये गये हैं। यहीं एक चट्टान से दुधिया रंग के गर्म पानी का चश्मा फूटता है। आसपास के गांव के लोगों ने यहां के विकास के लिये एक कमेटी का गठन किया है। कमेटी ने ही यहां पर महिलाओं व पुरुषों के लिये अलग- अलग स्नानागार बनाये हैं। सर्दियों के अलावा यहां पर खीर गंगा कमेटी द्वारा नियमित रूप से लंगर लगाया जाता है। बीस भादों को खीर गंगा में एक विशाल मेला लगता है। उस दिन श्रद्धालुओं के साथ-साथ देवी देवता भी यहां स्नान करने आते हैं खीर गंगा से ही एक पैदल रास्ता स्पीति घाटी की पिन वैली को जाता है। मानतलाई होते हुए यह रास्ता बहुत ही खतरनाक और जोखिम भरा है। कालांतर में इस रास्ते का प्रयोग केवल व्यापारी ही करते थे। लेकिन अब यह रास्ता साहसिक पर्यटन का आनंद उठाने वाले सैलानियों के लिये ट्रैकिंग रूट बना हुआ है। गर्मियों व बरसात के मौसम में इस रास्ते में विदेशी सैलानी पैदल यात्रा पर जाते हैं। खीर गंगा विदेशी सैलानियों का ही अड्डा है। यहां पर ज्यादातर विदेशी सैलानी ही मिलते हैं। खीर गंगा एक बेहतर व सुंदर सैरगाह है। हालांकि पार्वती जलविद्युत परियोजना द्वारा खीर गंगा के रास्ते में वरशैणी तक सड़क बना दी गई है जिससे खीर गंगा जाने वालों को काफी सुविधा हो गई है। खीर गंगा जाने के लिये कुल्लू व भुंतर से वरशैणी तक बस या टैक्सी द्वारा तथा वहां से आगे पैदल जाया जा सकता है। यहां पर ठहरने की कोई उचित व्यवस्था नहीं है, ठहरने की व्यवस्था मणिकर्ण में ही है। वरशैणी में भी अब गैस्टहाउस बन गये हैं मगर बेहतर ठहराव मणिकर्ण ही है। खीर गंगा एक धार्मिक स्थल होने के साथ-साथ बेहतर पर्यटन स्थल भी साबित हो सकता है।

किन्नर देव संस्कृति

(पृष्ठ 6 का शेष) बच्चे के गले में पहनने के लिए देते हैं। देवता जब गुर के माध्यम से किसी से बात करते हैं तो पानी पीते-पीते बात करते हैं। जिसमें देवता के लिए पीने के लिए पानी होता है उसे फुंबा कहते हैं। इसमें एक कड़ा लगा होता है। इस गाँव में देवता की एक तलवार भी है जो बौद्ध विहार में रखी हुई है। यह देखने में चाँदी से बनी हुई लगती है। इस गाँव के लोग बताते हैं कि कुछ वर्ष पहले डबला देवता का जो गुर था, उसकी मृत्यु हो गई। उस व्यक्ति का नाम श्री चन्द्र सिंह था। सन् 2003 में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के पश्चात् डबला देवता ने किसी भी व्यक्ति को अपना गुर नहीं चुना। यहाँ के लोगों ने डबला देवता को उठाने या जगाने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु डबला देवता नहीं जागे। पूह गाँव में इनकी बहन ने भी गुर में आना बंद कर दिया है। यहाँ के लोग अभी भी अवसर विशेष पर डबला देवता को जगाने का प्रयत्न करते हैं। उनका मानना है कि शायद कभी न कभी वे डबला देवता को मना कर जगा देंगे।

जैविक खेती अपनाएं उत्पादकता बढ़ाएं

कृषि की पैदावार हेतु अत्याधिक कीटनाशक, रासायनिक खाद, सघन खेती, किसी स्थान पर एक ही फसल की बार-बार खेती ने पारिस्थितिकीय तंत्र में मौजूद पदार्थों और स्रोतों को न केवल नष्ट कर दिया है बल्कि इसका असर कृषि उत्पादन पर भी पड़ा है। किसान व बागबान भूमि के उपजाऊपन को बनाये रखने के लिए जैविक खेती की ओर रुख कर रहे हैं।

वास्तव में जैविक कृषि विभिन्न तकनीक का मात्र समूह ही नहीं यह कृषि की एक सम्पूर्ण पद्धति है जिसमें पर्यावरण और प्रकृति की स्वच्छता, संतुलन को हानि पहुंचाए बिना तथा भूमि उपजाऊ क्षमता और पानी की गुणवत्ता को बरकरार रखते हुए लम्बे समय तक अधिक पैदावार ली जा सकती है। इस प्रकार की खेती में रासायनिक खादों की तरह गोबर, गोमूत्र, पौधों के भूसे को उचित तरीकों से अपनाया जा सकता है ताकि खेती में होने वाले रसायनों के खर्चों को कम करके अधिक पैदावार प्राप्त की जा सके। गोबर, गोमूत्र, पौधे के भूसे इत्यादि प्राकृतिक पदार्थों से बनाई जाने वाली खाद को वैज्ञानिक मानकों के अनुसार इस्तेमाल करने को ही जैविक खेती कहा जाता है। इसमें केंचुए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

केहर सिंह ठाकुर

प्राचीन काल से ही फसल के लिए जैविक खादों का विशेष स्थान रहा है। आधुनिक युग में रासायनिक खादों के आने से भले ही उपज में बढ़ोतरी हुई है लेकिन कुछ वर्षों के बाद इसके लगातार प्रयोग से उपज बढ़ने के स्थान पर घटी है, जिसका मुख्य कारण मिट्टी में जैविक पदार्थों का कम होना और मिट्टी की संरचना का बिगड़ना है।

मिट्टी में जैविक शक्ति के रूप में फफूंदी शैवाल सूक्ष्म जीवाणु तथा केंचुए जैसे प्राणी पलते हैं। ये सब मिलकर मिट्टी में पोषक तत्वों को बढ़ाते हैं और मिट्टी को उपजाऊ बनाये रखते हैं। इनके सबके बिना मिट्टी जीवन रहित हो जाती है जिससे भूमि कटाव जैसी समस्याएं बढ़ जाती हैं। यह पदार्थ न सिर्फ मिट्टी को तबाह कर रहा है बल्कि पानी के भूमिगत रिसाव के कारण आंतरिक जल भण्डारों को भी दूषित बना रहे हैं। रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से इसका जहरीला असर अन्न, सब्जी, फल, दूध के माध्यम से मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए खतरा बढ़ा रहा है। इन सब समस्याओं का समाधान आर्गेनिक फार्मिंग द्वारा किया जा सकता है।

देश में हर वर्ष 70 करोड़ टन से भी अधिक कचरा, पत्ते, कागज आदि के रूप में इकट्ठा होता है जिससे हमारी फसलों की उपज, गुणवत्ता आदि में भारी कमी आई। हमारे गांव में कचरा, घास, गोबर, फसलों का भूसा, सब्जियों और फलों के छिलके इत्यादि काफी मात्रा में पाये जाते हैं जिन्हें किसान या तो जलाकर या जमीन पर ढेर लगाकर छोड़ देते हैं। यह सब कचरा इधर-उधर फैला रहता है जिससे हानिकारक जीवाणु व कीटाणु जन्म लेते हैं जो पशुधन, पौधों एवं मानव जाति में कई तरह के रोगों का मुख्य कारण बनते हैं। प्रदेश सरकार द्वारा किसानों को जैविक खेती की जानकारी प्रदान की जा रही है तथा हाल ही के वर्षों में सरकार के प्रयासों से किसान जैविक खेती की ओर आकर्षित हुए हैं।

संभलकर करें सेब तुड़ान

प्रकृति ने फल को कई प्रकार के लुभावने रंगों में तथा विभिन्न आकर्षक आकारों में मानव को दिया है। फलों की गंध और उनके स्वाद से सभी भली भांति परिचित हैं। फलों के आकर्षक रूप और आकार देखर सभी का मन उन्हें पाने को लालायित हो उठता है और उसे पाने के लिए और चखने के लिए वह उसे पेड़ से तोड़कर या बाजार से खरीद कर अपने आपको आनन्दित कर संतुष्टि प्राप्त करता है।

लगभग सभी फल पेड़ पर अपना पूरा आकार ग्रहण कर लेते हैं। उन पर जातीय आकार और गुण सामान्यतया पेड़ पर लगे फलों पर आता है। कुछ फल ऐसे भी हैं जिन पर रंगत फलों के पेड़ से तोड़ने के उपरांत आती है और

● डॉ. वी.के. शर्मा

ऐसे फल भण्डारण के लिए उपयुक्त होते हैं। सेब इसी वर्ग का फल है।

सेब प्राय: मध्य जुलाई में तोड़े जाते हैं। अगेती प्रजाति विशेषतया टाईडमैन्ज अर्ली, वरसैस्टर, मैकन्टोश, रैड जून आदि इस समय निचले पर्वतीय क्षेत्रों में तथा 10 दिन बाद मध्य पर्वतीय क्षेत्रों से तोड़ लिये जाते हैं। इस समय प्राय: सभी फलों का रंग गहरा हरा या थोड़ी पीली रंगत वाला होता है। कुछ दिनों बाद इन पर जातीय रंगत आनी शुरू हो जाती है। गूदा भी थोड़ा नरम होकर अब हल्के पीले रंग का हो जाता है और उसमें रस और गंध का आभास होने लग जाता है।

रैड डिलिशियस, रॉयल डिलिशियस तथा स्पर वाली जातियां निचले क्षेत्रों में जुलाई के अंत से अगस्त के प्रथम सप्ताह में तोड़ ली जाती है। पेड़ पर इन फलों पर हल्का सा लाल रंग आना शुरू होते ही तोड़ लिया जाता है। फल भण्डार अथवा यातायात के दौरान अपना जातीय गुण ग्रहण कर लेते हैं। इनमें रस की मात्रा भी बन जाती है तथा गूदा हल्का पीला और कठोर न होकर नरम हो जाता है।

गोल्डन डिलिशियस जाति के फल प्राय: अगस्त के अंत से लेकर सितम्बर के अंत तक समुद्र तल की ऊंचाई पर स्थित बागीचे के अनुसार तोड़ लिये जाते हैं। इन फलों पर शुरू में हरा रंग रहता है जो बाद में पीला या सुनहरा हो जाता है। रंग बदलने के साथ- साथ इसके गंध और स्वाद में वांछनीय परिवर्तन होता है। कई स्थानों पर इन फलों पर थोड़ा लाल रंग भी आ जाता है। वास्तव में ये फल सबसे अधिक रसीले और मीठे होते हैं। ये फल आकार में मध्यम ही रहते हैं।

इसी प्रकार ग्रैनी स्मिथ जाति के फलों को सितम्बर के अंत में तोड़ा जाता है। इन फलों पर प्राय: हरा रंग ही रहता है। पकने पर इनका हरा रंग थोड़ा हल्का होकर पीला सा हो जाता है परन्तु रस की मात्रा बढ़ जाती है। इन फलों का गूदा प्राय: कठोर और सफेद होता है। देखने में ये फल अधिक अच्छे नहीं लगते परन्तु खाने में स्वादु और रसीले होते हैं। अन्य जातियां भी समयानुसार तोड़ी जाती हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि फलों को उचित समय पर तोड़ा जाये। फलों को तोड़ने का काम बागबान अपने अनुभव के आधार पर और मण्डी या उपयोग के आधार पर करते हैं।

यदि फल को शीघ्र बेचना हो तो कुछ बागबान पेड़ों पर जब फल तैयार हो, इथरल का छिड़काव करते हैं। इस छिड़काव से फलों पर लाल रंगत तो

शीघ्र आ जाती है परन्तु उनका पकना तेज हो जाता है और कुछ ही दिनों में वे सड़ने शुरू हो जाते हैं। पेड़ तथा भविष्य की उत्पाद शक्ति को बनाये रखने के लिए ऐसा छिड़काव हानिकारक है।

फलों की कठोरता को बनाये रखने के लिए फलों को पेड़ पर तोड़ने से तीन सप्ताह पूर्व कैल्शियम क्लोराइड का छिड़काव किया जाता है। इसकी मात्रा लगभग 0.5 प्रतिशत रखी जाती है। इस छिड़काव से पेड़ तथा फलों को कैल्शियम तत्व मिल जाता है जो फल के छिलके को कठोरता प्रदान करता है। फलों को तोड़ते समय कई सावधानियां प्रयोग में लाई जाती हैं। फल को हथेली पर रखकर थोड़ा घुमायें और हल्का सा झटका दें ताकि वह शाखा से पृथक हो जाये। डंठल नहीं टूटना चाहिए। फल को हल्के से टोकरी में रखें। टोकरी या किलटे में 10 किलो से अधिक फल रखने की क्षमता नहीं होनी चाहिए। फलों पर दबाव नहीं पड़ना चाहिए। यदि हो सके तो कच्चे, क्षतिग्रस्त, रोगग्रस्त या कीड़े से प्रभावित फलों को पृथक स्थान पर रखें। इन्हें अच्छे फलों के साथ न रखें।

सायंकाल को फलों को भण्डार मे रखें। भण्डार साफ होना चाहिए। अगले दिन फलों की छंटाई तथा अन्य कार्य करें। भण्डार में चूहों, कीटों तथा नमी का प्रकोप नहीं होना चाहिए। एक रात के लिए फलों को छोटे ढेर के रूप में या फैलाकर रखें। फलों को संभलकर रखना एक कला है। इसके सीखने के लिए अनुभव आवश्यक है। यह कार्य करना सरल है परन्तु थोड़ी सावधानी रखना अनिवार्य है। बागबान को वर्ष भर की मेहनत का फल पूर्णतया प्राप्त करने के लिए पेड़ पर फलों की सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध करना चाहिए। इसलिए पेड़ पर फलों को संभाल कर रखें और सही समय पर उचित विधि से सावधानीपूर्वक फल तोड़कर मण्डी भिजवायें।

सासन पंचायत

जहां अब अंधेरा नहीं होता

ऊना जिले की सासन पंचायत में सूरज डूबने के साथ ही यहां के सभी निवासी घरों में दुबक जाते थे। आज पंचायत के निवासियों को अंधेरे से डर नहीं लगता और वे बेखौफ होकर एक दूसरे के घर आ-जा सकते हैं। यह संभव हुआ है हिमऊर्जा के प्रयासों से, जिसमें सूर्य की ऊर्जा का सही दोहन कर पंचायत को प्रकाशमान बनाया है।

इस पंचायत में ऊर्जा विभाग द्वारा 27 सोलर लाइटें लगाई गई हैं। पूरी

« पन्ना लाल शर्मा

पंचायत दूर से भी रात भर रोशनी से नहाई नजर आती है ऐसा प्रतीत होता है जैसे यहां सूरज कभी डूबता ही न हो। एक समय था जब यहां के निवासियों को टार्च व मशाल लेकर रात में बाहर निकलना पड़ता था।

सासन, प्रदेश की पहली गैर-जनजातीय पंचायत है जहां गैर-पारम्परिक ऊर्जा स्रोत का उपयोग कर रोशनी प्रदान की गई है। सर्वप्रथम राज्य में किन्नौर जिले के कुन्नू-चारंग व शेलखर गांवों को सोलर लाइट प्रणाली स्थापित कर प्रकाशमान बनाया गया था। सौर ऊर्जा धरती पर सबसे बड़ा ऊर्जा स्रोत है तथा इसका पूर्ण दोहन कर सभी ऊर्जा जरूरतों को पूर्ण किया जा सकता है। जल विद्युत, ताप, परमाणु ऊर्जा का जहां पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पड़ता है वहीं गैर-पारम्परिक ऊर्जा स्रोत पर्यावरण के लिए स्वच्छ एवं कभी न समाप्त होने वाले ऊर्जा स्रोत हैं। राज्य में गैर पारम्परिक ऊर्जा स्रोतों के समुचित दोहन के लिए वर्ष 1989 में हिम ऊर्जा का गठन किया गया था। विभाग द्वारा ऊर्जा के इन स्रोतों को लोकप्रिय बनाने के लिए उपदान योजना आरम्भ की है। प्रदेशवासियों में सोलर कुकर, सोलर लैम्प, स्ट्रीट लाइट, सोलर गृह प्रकाश यंत्र तथा सोलर वाटर हीटर अत्याधिक लोकप्रिय हो रहे हैं।

पंचायत में स्थापित सौर ऊर्जा प्रणाली

सासन गांव में स्थापित सोलर स्ट्रीट लाइट की देखभाल का कार्य पंचायत को सौंपा गया है। विभाग ने जिले भर में ऊर्जा के गैर पारम्परिक स्रोत कार्यक्रम के तहत 187 सोलर लाइट लगाई गई है। इसके अतिरिक्त विशेष घटक योजना के तहत अनुसूचित जनजाति बस्तियों में 188 सोलर लाइट लगाई गई हैं। सासन गांव में स्थापित लाइट पर 80 प्रतिशत अनुदान दिया गया है। प्रत्येक सौर प्रकाश प्रणाली पर 17,300 रुपये का उपदान दिया गया है। आधुनिक प्रौद्योगिकी से निर्मित ये सोलर प्रणाली वाली लाइट अंधेरा होते स्वत: ही जल जाती है तथा प्रात: सूरज का प्रकाश होते ही बंद हो जाती है। दिन के प्रकाश में इसके पैनल पर लगे सैल सौर ऊर्जा को संग्रहित कर लेते हैं। सरकार के प्रयासों से जहां ग्रामीण क्षेत्रों में गैर पारम्परिक ऊर्जा स्रोतों को लोकप्रिय बनाने में सहायता मिली है वहीं ग्रामीणों को ऐसा तोहफ़ा मिला है, जिसका उन्हें कोई भी पैसा नहीं देना पड़ता।

सावधानी से करें कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग

आज जनसंख्या वृद्धि न केवल किसी एक राष्ट्र की बल्कि समूचे विश्व के लिए गंभीर समस्या हो गई है इस बढ़ती जा रही आबादी के उदर पूर्ति हेतु नये-नये वैज्ञानिक तरीकों से अन्न का उत्पादन किया जा रहा है। खेतों में खड़ी फसलों तथा अन्न भण्डारों को चूहों तथा अन्य कीट पतंगों से बचाने के लिए कीटनाशक रसायनों का प्रयोग हो रहा है। लेकिन कीटनाशक रसायनों के बढ़ते प्रयोग के जो घातक दुष्परिणाम सामने आये हैं, वे शायद इन खोजी वैज्ञानिकों ने पहले नहीं सोचे थे। आज विश्व भर के वैज्ञानिकों तथा आविष्कारकों के लिए कीटनाशक दवाइयां एक गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है।

कीटनाशक दवाइयों को जब छिड़का जाता है तो उनका प्रभाव पेड़-पौधों पर ही नहीं अन्न, शाक, फल पर भी पड़ता है, जो पेट में पहुंचकर स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध हो सकते हैं। गोदामों में जो रसायन अन्न को सुरक्षित रखने के लिए छिड़के जाते हैं, वे अंतत: खाने वालों के पेट में ही पहुंचते हैं और वह मंद विष बनकर अपना दुष्प्रभाव छोड़ते हैं। अक्सर यह भी पाया गया है कि जिन कीट-पतंगों को मारने के लिए रसायन या दवाइयां छिड़की गई हैं, वे विषाक्त घोलों से अपनी रक्षा करने में समर्थ रहे और मनुष्यों के लिए जानलेवा संकट खड़ा हो गया। कीट-पतंगों की नई पीढ़ी इतनी ढीठ साबित हुई कि वह घातक रसायनों को ठेंगा दिखाकर अपना विनाश कार्य बड़ी प्रसन्नता से करती रही।

रेकल कार्सन ने अपनी पुस्तक 'दी साइलेंट स्प्रिंग' में अमेरिकी जनता की शारीरिक स्थिति की चर्चा करते हुए लिखा है कि यहां हर मनुष्य के शरीर में डीडीटी एवं आर्गेनोक्लोरीन समूह के विषैले रसायनों की मात्रा बढ़ती जा रही है। अभी यह परिणाम दस लाख के पीछे बारह भाग है, जो क्रमश: धीरे-धीरे बढ़ता ही जा रहा है। कीटनाशक दवाओं के कारखानों में जो कर्मचारी

● पुष्कर द्विवेदी

कार्यरत हैं, उनके शरीर में यह मात्रा छह सौ अड़तालीस (648) तक पहुंच गई है। आज यहां का वैज्ञानिक मानव आहार में रासायनिक दुष्परिणामों को रोकने के लिए चिंताग्रस्त है।

कार्सल ने अपनी उक्त पुस्तक में पक्षियों के विनाश का मार्मिक चित्रण किया है। उन्होंने लिखा है कि प्रकृति का संतुलन ही इन कीटनाशकों ने बिगाड़ दिया है। कीटनाशकों वाली घास खाकर पशु तथा बीज खाकर पक्षी विषाक्त होकर मर गये। अमेरिका तथा यूरोप के कुछ देशों में पशु-पक्षियों की प्रजनन क्षमता में गिरावट आई है। आज अमेरिका ने डीडीटी आदि प्रभावी कीटनाशकों पर अस्थायी रोका लगा दी है तथा हानि से बचने के अन्य उपाय खोजे जा रहे हैं।

नये उपायों में जिन रसायनों की खोज करके नये परीक्षण किये गये, उनसे तीन परिणाम सामने आये। पहला यह कि पक्षियों के घौंसलों से अंडे गुम होने लगे। दूसरा पक्षी स्वयं अपने अंडें नष्ट करने लगे और तीसरा यह कि अण्डों के ऊपर का खोल बहुत पतला पड़ गया। यह पतलापन उस प्रतिशत तक बढ़ा, जिससे अण्डे जरा से आघात से टूटने लगे। यहां तक कि मादा जब अंडों को सेने के लिए करवट बदलती तो अंटे फूट जाते।

इतना ही नहीं, मातृत्व की उदात्त भावना से भरे पशु-पक्षी कीटनाशक दवाओं के प्रभाव से हिंसक तथा क्रूर हो गये। वे भावना शून्य तथा आलसी बन गये। कई पक्षी ऋतु सेवन के पश्चात भी गर्भ धारण करने से वंचित रहे, जबकि आम तौर पर पक्षियों का ऋतु सेवन शत-प्रतिशत प्रजनन में ही परिणत होता है। आज समूचे विश्व के वैज्ञानिक अपनी खोजों से परेशान हैं। पशु पक्षियों पर कीटनाशकों के जो दुष्प्रभाव सामने आये हैं, वे निश्चित तौर पर मनुष्यों पर भी पड़ेंगे और पड़ रहे हैं। इन सभी दुष्परिणामों को देखते हुए कीटनाशकों का प्रयोग वहीं तक उचित है जहां खटमल, जूएं आदि को मारने की बात हो तथा जिन्हें मारते हुए अन्य खाद्य वस्तुएं प्रभावित नहीं होती हैं। इसके साथ है अनाज में छिड़कने वाली दवाइयों के प्रयोग के बाद अनाज किस प्रकार धोकर खाने में लाया जाये, लोगों को यह जानकारी देना अति आवश्यक है।

स्वास्थ्य

कॉलेस्ट्रॉल शरीर के लिए कितना घातक कितना उपयोगी

उस दिन ऑफिस में काम करते-करते सोमनाथ को बेचैनी हुई। उसके हृदय में दर्द उठा। दर्द से सोमनाथ जी जोर से चिल्लाए और कुछ देर छटपटा कर शांत हो गये। उन्हें तुरंत समीप के नर्सिंग होम में ले जाया गया। डॉक्टर ने उनका परीक्षण करके बताया कि उन्हें एंजाइना हुआ था। बाद में परीक्षण से पता चला कि उनकी कोरोनरी धमनी में कोलेस्ट्रॉल एकत्र हो जाने से एंजाइना हुआ है।

कोलेस्ट्रॉल हार्ट अटैक का कारण बनता है। कोरीनरी धमनी में कॉलेस्ट्रॉल के जमने से जब हृदय को रक्त नहीं मिल पाता तो हार्ट अटैक हो जाता है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि कॉलेस्ट्राल क्या है और यह शरीर में कैसे उत्पन्न होता है। कॉलेस्ट्राल मोम की तरह वसा युक्त पदार्थ है। शरीर के प्रत्येक अंग में कॉलेस्ट्रॉल विद्यमान रहता है। चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार बचपन

● शशि भूषण शलभ

से ही कॉलेस्ट्रॉल की उत्पत्ति प्रारम्भ हो जाती है।

कॉलेस्ट्रॉल जीवन के लिए जितना घातक है, स्वास्थ्य के लिए उतना ही उपयोगी भी होता है। शरीर की विभिन्न कोशिकाओं में विद्यमान होने के कारण कोशिकाओं को उनका आवरण (सेल मेम्ब्रेन) मिलता है। कोलेस्ट्रॉल से तंत्रिकाएं अपने लिए इंसुलीन एकत्र कर पाती हैं।

कॉलेस्ट्रॉल की सहायता से यकृत (लिवर) गुणकारी एंजाइम (पाचक रस) पित्त (बाइल) का निर्माण करता है। विशेषज्ञों के अनुसार शरीर की आवश्यकता का 80 प्रतिशत कॉलेस्ट्रॉल प्राकृतिक रूप से शरीर में ही निर्मित होता है। कॉलेस्ट्रॉल की उत्पत्ति यकृत में ही होती है। शेष कॉलेस्ट्रॉल शरीर को भोजन के वसा युक्त पदार्थों से मिलता है।

कॉलेस्ट्रॉल रक्त में प्रोटीन तत्वों से चिपका रहता है। रक्त के साथ चिपकने की क्रिया को 'ताइपो प्रोटीन' कहा जाता है। कॉलेस्ट्रॉल में लाभप्रद और हानिकारक तत्व होते हैं। जब इन तत्वों की शरीर में अधिकता होती है तो कॉलेस्ट्रॉल रक्त धमनियों में दीवारों के साथ एकत्र होने लगता है। अधिक मात्रा में एकत्र हो जाने पर कोलेस्ट्रॉल रक्त संचार रोककर एंजाइना की उत्पत्ति करता है।

कॉलेस्ट्रॉल तीन तरह का होता है। एक-लो डेंसिटी लाइपोप्रोटीन (एलडीएल), दूसरा-हाई डेंसिटी लाइपोप्रोटीन (एचडीएस) और तीसरा- वेरी लो डेंसिटी लाइपोप्रोटीन (डीएलबीएल) लो डेंसिटी लाइपोप्रोटीन कॉलेस्ट्रॉल शरीर को बहुत हानि पहुंचाता है। धमनियों में एकत्र होकर एंजाइना की उत्पत्ति करता है। जो मनुष्य के लिए प्राण घातक सिद्ध होता है। हाई डेंसिटी लाइपोप्रोटीन कॉलेस्ट्रॉल शरीर के लिए गुणकारी होता है। इस कॉलेस्ट्रॉल वसा की मात्रा बहुत कम होती है। इसमें प्रोटीन की मात्रा अधिक रहती है। इस कॉलेस्ट्रॉल से धमनियों में एकत्र लो डेंसिटी लाइपोप्रोटीन कॉलेस्ट्रॉल को धमनियों से पिघलाकर यकृत में पहुंचा देता है। शरीर को इस कॉलेस्ट्रॉल से बहुत लाभ होता है।

शरीर में वसा (चर्बी) ट्राइग्लिस राइड के रूप में रहती है। शरीर को ऊर्जा देने के लिए अतिरिक्त जितनी कैलोरी शेष रहती है उसे कॉलेस्ट्रॉल ट्राइग्लिसराइड में परिवर्तित कर देता है। वसा की कोशिकाएं ट्राइग्लिसराइड को एकत्र करके रखती है।

शरीर में कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा का पता लगाने के लिए डॉक्टर 'लिपिट प्रोफाइल' टेस्ट कहते हैं। भोजन में वसा युक्त खाद्य पदार्थों पर नियंत्रण रखकर शरीर में हानिकारक लो डेंसिटी लाइपोप्रोटीन कॉलेस्ट्रॉल को कम किया

कॉलेस्ट्रॉल जीवन के लिए जितना घातक है, स्वास्थ्य के लिए उतना ही उपयोगी भी होता है। शरीर की विभिन्न कोशिकाओं में विद्यमान होने के कारण कोशिकाओं को उनका आवरण (सेल मेम्ब्रेन) मिलता है। कॉलेस्ट्रॉल से तंत्रिकाएं अपने लिए इंसुलीन एकत्र कर पाती हैं।

जा सकता है। भोजन में हरे पत्तेदार सब्जियां, रेशेदान फल-नाशपती, केला, सेब, आलू बुखारा, संतरा, मौसम्मी खाकर हानिकारक कॉलेस्ट्रॉल पर नियंत्रण रख सकते हैं।

हरी मिर्च, करेला, शलजम, पत्ता गोभी, मटर, गाजर आदि सब्जियां भी कॉलेस्ट्रॉल से सुरक्षित रखती हैं। छिलके वाली दालें, चोकर वाले आटे की चपातियां भी हानिकारक कॉलेस्ट्रॉल से बचाती हैं। बिना रेशे (फाइबर) के खाद्य पदार्थ जैसे मांस, दूध से बने खाद्य, अधिक मात्रा में सेवन करने से शरीर में वसा और कॉलेस्ट्रॉल अधिक मात्रा में बनते हैं।

रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट्स में रेशों की मात्रा कम होती है। इनके सेवन से मधुमेह रोग, स्थूलता (मोटापा), हृदय रोग और बड़ी आंत का कैंसर जैसे भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं। वयस्क स्त्री-पुरुषों को प्रतिदिन 30 ग्राम रेशेदार खाद्य पदार्थों का सेवन अवश्य करना चाहिए। पॉपकोर्न में रेशों की मात्रा अधिक होती है।

घी, तेल, मक्खन आदि वसा युक्त खाद्य पदार्थों में संतृप्त वसीय अम्ल (सैचुरेटिड फैरी एसिड) अधिक मात्रा में होता है तो कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा अधिक विघटित होती है। सूरजमुखी, सोयाबीन, मकई के तेलों का इस्तेमाल करने से तो डेंसिटी लाइपोप्रोटीन कॉलेस्ट्रॉल से सुरक्षा होती है। भोजन के साथ टमाटर, मूली, गाजर, खीरे आदि का सलाद खाने से कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा कम होती है।

शरीर में हानिकारक कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा कम करने के लिए प्रातःकाल किसी पार्क में जाना सबसे लाभप्रद होता है। शारीरिक श्रम के लिए बैडमिंटन, जॉगिंग, ऐरोबिक्स, स्विमिंग पूल में तैरना सबसे सरल व्यायाम है।

बाल कविता

छाता राम

मैं हूं छाताराम तुम्हारा,
गर्मी वर्षा का रखवाला।
काला हूं तो क्या है भाई,
है तो बहुत बड़े दिलवाला।
स्कूल जाओ या जाओ दफ्तर,
डॉक्टर हो या होवे सिस्टर।
बड़े प्यार से मुझे उठाते,
मैं हूं छाता राम मिस्टर।
टॉफी बिस्कुट मैं नहीं खाता,
हलवा पूरी से घबराता।
तुम चाहे ठण्डा शर्बत पियो,
सबकुछ भूखे मैं सह जाता।
बहुत काले रंग के होते,
काम हमेशा अच्छे होते।
रंग रूप पर कभी न जाना,
गुणवान सर्वदा अच्छे होते।

▸▸ शशि कांत शास्त्री

cky dgkuh

आत्मनिर्भर

रावी नदी के किनारे एक बहुत बड़ा वट वृक्ष था। उस पर बहुत सारे पक्षी रहा करते थे। वट वृक्ष पर मीनू चिड़िया अपने दो बच्चों चुन्नू, मुन्नू के साथ रहती थी। चुन्नू बड़ा तथा मुन्नू छोटा था। मुन्नू के छोटे होने के कारण उसकी अम्मा उसे ज्यादा लाड़-प्यार करती थी। लाड़-प्यार की वजह से मुन्नू की आदतें बिगड़ चुकी थीं। वह पक्का आलसी बन गया था। मुन्नू के दूसरे साथी तथा चुन्नू अपने लिए खुद भोजन की तलाश करते थे। जबकि मुन्नू भोजन के मामले में अपनी अम्मा पर ही निर्भर रहता था। मीनू ने कई बार उसे समझाते हुए कहा, 'अब तुम बड़े हो गये हो। अपने लिए खुद भोजन ढूंढा करो।'

'अम्मा, मैं अभी बहुत छोटा हूं। मैं कैसे भोजन ढूंढ पाऊंगा? मुन्नू बहाना बना देता।

'ज्यादा बहाने मत बनाया करो। देखो तुम्हारे सभी साथी खुद अपने लिए भोजन तलाशते हैं। एक तुम हो जो बेवजह ही आलसी बन रहे हो।' मीनू ने उसे समझाते हुए कहा।

मुन्नू के ऊपर उसकी अम्मा की बातों का कोई असर नहीं होता। वह एक कान से सुनता, दूसरे कान से निकाल देता। मीनू रात-दिन यही सोचती रहती कि इस आराम परसती मुन्नू को कैसे सुधारा जाये?

'बहन, मैं अपने आलसी मुन्नू से तंग आ चुकी हूं। इसे कैसे रास्ते पर लाया जाये? इतना बड़ा हो गया है, अभी तक भोजन के लिए मेरा मुंह ताकता रहता है।' मीनू अपनी पड़ोसन रिंकी चिड़िया से बोली।

'हां, बहन तुम ठीक कहती हो, मुन्नू बड़ा हो गया है। उसे खुद ही भोजन तलाशना चाहिए।' रिंकी ने कहा।

'मैं तो उसे समझाते-समझाते थक चुकी हूं। अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करूं?'

'तुम एक दिन काम का बहाना बनाकर सुबह से ही दूर निकल जाना।' रिंकी ने उसे अपनी योजना समझाते हुए कहा, 'बाकी मैं देख लूंगी।' मीनू ने वैसा ही किया।

सुबह से दोपहर होने को आई मुन्नू अपनी अम्मा के इंतजार में बैठा रहा। भूख के मारे उसके पेट में चूहे कूद रहे थे। मां का इंतजार करते- करते, शाम होने का आ गई। मुन्नू की भूख के मारे हालत पतली हो रही थी। उसे अपनी अम्मा पर बहुत गुस्सा आ रहा था। जब उसे कोई चारा नहीं दिखाई दिया तो वह रिंकी चिड़िया के पास गया।

'मौसी, अम्मा न जाने सुबह से कहां चली गई। मुझे जोर की भूख लगी हुई है। कुछ खाने को दो।'

'तुम्हें शर्म नहीं आती, इतने बड़े होकर दूसरों के आगे हाथ फैलाते हो। रिंकी ने उसे डांटते हुए कहा, 'जाओ अपना भोजन खुद ढूंढो। मां के सिरहाने कब तक बैठे रहोगे।'

मुन्नू कुछ नहीं बोला। चुपचाप वहां से निकल गया। थोड़ी दूर उसे अपने साथी दिखाई दिये। वे छोटे- छोटे कीड़े-मकौड़ों को अपना शिकार बना रहे थे। मुन्नू ने भी उन्हें देखकर वैसा ही किया। मीनू ने जब उसे ऐसा करते देखा तो वह मन ही मन प्रसन्न हो रही थी। वह बिना कुछ कहे चुपचाप वृक्ष की ओर चली गई। मुन्नू जब लौट कर आया तो अपनी अम्मा से बोला, 'अम्मा, तुम सुबह से कहां चली गई थी। मेरा भूख के मारे बहुत बुरा हाल हो रहा था। रिंकी मौसी ने भी खाना देने से इंकार कर दिया। आज मैंने खुद ही अपने लिए भोजन ढूंढ लिया।'

'शाबास, मेरे बेटे, आज तुमने बहुत अच्छा काम किया है। मीनू ने उसके सर पर प्यार से पंजा फेरते हुए कहा, 'मैं भी यही चाहती थी कि तुम दूसरों के ऊपर आश्रित होने के बजाये खुद आत्मनिर्भर बनो।'

आलसी मुन्नू सुधर चुका था। मीनू उसके ऊपर खुश थी।

अमर सिंह शौल

लघुकथा

अधूरा सपना

वो पागल औरत जिसे लोग देवकी कहकर बुलाते थे, अक्सर बाजार में घुमती हुई कूड़ा बीनती रहती इधर- उधर मिल ही जाती। इसी तरह उसने अपने जीवन के लगभग बीस वर्ष बीता दिये थे। वह गांव से इस छोटे से कस्बे में आई तो फिर मुड़कर नहीं गई। मैं बस स्टैंड पर बैठा था। देवकी मेरे सामने की दुकान के बाहर कागज उठा रही थी। मैं उसकी प्रणय कथा से परिचित था। क्योंकि देवकी मेरे गांव के बगल वाले गांव से ही थी। मैं उसे देख उसकी जवानी की यादों में खो गया। कितनी खूबसूरत थी वह। जब वह लगभग बीस वर्ष की थी। उन दिनों इस क्षेत्र में प्रोजेक्ट का कार्य चला हुआ था। जगह- जगह से लोग इस प्रोजेक्ट में कार्य करने आये थे। पंजाब से एक युवक जिसका नाम अवतार था, वह भी प्रोजेक्ट में बतौर रिग्गर कार्य करने आया था। वह देवकी के घर के साथ ही दूसरे घर में किराये पर रहता था। कुछ दिनों बाद ही दोनों का प्रेम पूरे गांव में चर्चा का विषय बन गया। तब अवतार ने उससे विवाह कर लिया।

फिर लगभग छह महीने बाद ही वह किसी दूसरे प्रोजेक्ट में स्थानांतरित हो गया और देवकी को बाद में ले जाने का आश्वासन दे मुड़कर नहीं आया। देवकी काफी दिनों तक उसके वापिस आने का इंतजार करती रही। फिर न जाने कब वह अपने अवतार की याद में पागल हो गई। लोग उसे पागल-पागल कहने लगे। वह हर किसी से अवतार के बारे में पूछती, 'वह कब आयेगा मुझे लेने? क्या आपने उसे देखा? वह मेरे लिए सूट खरीदने गया है।' आदि-आदि।

बस यही दोहराती रहती। इसी तरह वह गांव से इस छोटे से कस्बे में आ गई और यहीं उसने अपने अवतार को ढूंढते बीस बरस गुजार दिये थे। मैं उसके अतीत में खो गया था। सामने स्कूल में छुट्टी की घंटी बजी तो मैं पुनः देवकी के अतीत की स्मृतियों से वापिस लौटा। अब बच्चे इसकी बगल से गुजर रहे थे। एक-दो बच्चों ने शरारत भरे लहजे में कहा, 'देवकी, अवतार आ गया है। वह तुम्हारे लिए बाजार में सूट खरीद रहा है।' यह सुनकर उसकी आंखों में चमक आ गई। वह कागज उठाना छोड़ 'अवतार आ गया, अवतार आ गया' बड़बड़ाती हुई बाजार की तरफ दौड़ गई। मेरे जहन में एक अधूरा सा 'शेर उभर आया, 'प्यार पागल नहीं होता, पागल बना देता है...।'

–अशोक 'दर्द'

आदर सम्मान

स्वराज्य आंदोलन के दिनों की बात है। राजकोट के काठियावाड़ राज्य परिषद् का अधिवेशन हो रहा था। महात्मा गांधी अन्य नेताओं के संग मंच पर थे। उनकी दृष्टि कुछ दूरी पर बैठे एक वृद्ध पर पड़ी। वे बापू को कुछ जाने पहचाने से प्रतीत हुए। स्मरण शक्ति पर जरा जोर देने पर उनको मालूम हुआ, ये तो मेरे बचपन के अध्यापक हैं। बापू शीघ्र ही उनके पास गये और प्रणाम करके उनके चरणों के समीप बैठ गये। गुरुजी से उनके सब गृहजनों की कुशल क्षेम पूछी। जब काफी समय हो गया तो गुरुजी ने बापू से कहा, 'अब आप मंच पर पधारिये, वहां नेतागण आपकी प्रतीक्षा में होंगे।'

'नहीं, नहीं, मैं यही पर ठीक हूं। अब मैं मंच पर नहीं जाना चाहता। यहीं बैठकर कार्य देखूंगा। आप चिंता न कीजिये।' उनका अंतकरण यही अनुभव कर रहा था। मेरे गुरु नीचे बैठे हो तो मैं उनसे ऊंचे आसन पर कैसे बैठ सकता हूं। परिणामतया सभा की समाप्ति तक वे गुरुजी के चरणों के समीप ही बैठे रहे।

–जयेन्द्र

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

गिरिराज साप्ताहिक शिमला, 22—28 जुलाई, 2009

कांगड़े दिया वोलिया च

हिल्लण

डॉ. एच.एल. आहलूवालिया

भूकम्प जिसजो अपणियां पहाड़ी भाषा विच हिल्लण भी बोलदे हन, कने पुराणे उर्दू पढ़ियो बजुर्गां दे मुऐं ते इसजो ज़िलज़िला भी वोलदे सुणदे चले औआ करदे हन। ऐह भी कुदरता दा इसा धरतिया पर इक बड़ा-बड़ा अनोखा ही कहर है फिरी इसते अजे तिकर कोई भी वची नीं सकिया। सियाणे लोक भी ऐही गलान्दे सुणियो कि जाहलू भी इसा धरतिया पर ज्यादा ही पाप, जुल्म कने अत्याचार कने फिरी अणहुन्दे कम बढ़ी जान्दे हन तां इसा धरतिया पर जरूर कुछ ना कुछ घटना होई के रैहन्दी है। सियाणियां दियां गलां अज भी कई सच्च निकलदियां हन, इसच कोई शक करने दी गुंजाइश नीं होई सकदी। हिल्लण भी कईयां किस्मां दा हुन्दा जियां जे :—

कुदरती हिल्लण— कि धरतिया विच ज्यादा गैसां दे फैलणे ते धरती हिली पौन्दी है। अगर वैज्ञानिक तरीके कने दिखणे दी कोशिस करना तां एह गल अप्पू ही सिद्ध होई जान्दी कि बदलणा भी कुदरता दा नियम है, ऐह तां ठैहरिया कुदरता दा हिल्लण। पर धरतिया पर माहणु भी कोई घट, कहर नीं बरपा करदे हन।

वैज्ञानिक हिल्लण : अज तुसां दिखा कुसी टायमें साड़े बजुर्ग वाऊड़ियां, छरूड़ियां-च (झरना) पाणी, पीणे वास्ते भरदे थे। अज हर जगह हैण्डपैम्प लगा करदे, कईयां जगहां डैम वणी गै, कईया पहाड़ां च सुरंगा निकला करदियां। सड़कां वणी गेईयां, लोकां च पैसा कमाणे दी भी होड़ लगी गेई। वड़ियां-वड़ियां कोठियां पाई के बैठी गै। कई किसमां दे कारखानें, खाद वणाणे दे, सीमेन्टे दे कारखाने, प्लास्टिक वणाणे दे कारखाने, लोहे दे, सरिये दे, यानी तरह-तरह दी मशीनरी तियार होआ करदी। हुण तुसां खनन दे बारे ही दिखा। खड्डां, नालू कितणे नीहठे चले गै। खड्डां च कोई रेत नीं छड्डा दे, पत्थर नीं छड्डा दे, बज्जरी नीं छड्डा दे। इसा ही वजह ते कईयां जगहां जमीनां खिसकी गेईयां। अगर जुगती दी बरसात पेई जाये तां कई जगहां कई पासे ही रूड़ि जा करदे हन, पुल ढही जा करदे हन। सब तुहाड़े साहमणे ही सब कुछ होआ करदा है। पर फिरी भी लगियो, लगियो बस खनन ही तिन्हां दा इक रोजगार वणी के रेही गिया है।

पंजा-दसां सालां च ऐहो दिया हाल रिया तां क्यावणगा? अगर तुसां जंगला दे पासें नजर मारी के दिखण तां तित्थू भी रूखां दी प्रलय होआ करदी है। रूख कटणा तां आसान लगाणा बड़ा मुश्किल। अगर दस रूखा कटणे हुन तां तित्थु पहलें सौ रूख लगाणा जरूरी है। इसा वजह ते भूमि कटाव भी होआ करदा है। समे सिर सावधानी वर्तणे ते ही औणे वालियां हालातां वे बची सकदे हन। अज परयावणे विच संतुलन तां बिगड़िया ही है। धरतिया दा भी विगड़णे दी देर ही है। ऐह संयम ते ही कायम रेही सकदा है। तुसां दिखा इन्हां पंजा सतां सालां विच ही मौसम बदली गै कि सियाले मुकणे ते पहलें ही तौन्दी

आई जा करदी, तोन्दीया मुकणे ते पहलें ही बरसात कने बरसाती पूरिया हुणे ते पहलें ही सियाल आई जा करदा है।

दुऐं पासें दिखा कि जगह-जगह डैम वणा करदे, नहरां निकला करदियां, सुरंगां वणा करदियां साड़े पहाड़ी-हिमाचली इलाके च। विज्ञानिक कई- कई मंजिलां कोठियां पाणे ते तां मना करा करदे, चेतावनी भी दिया करदे हन, कि हिमाचली इलाका हिल्लणे दिया नजरां च ज्यादा ही संवेदनशील है। लेकिन जमीनां दा दोहन जेहड़ा होआ करदा, हैण्डपैम्पां दे जरियें पाणी कढा करदे, पहाड़ा च डैमां वणा करदे, खड़ियां पहाड़ों जो तोड़ा करदे- इहदी कैंहनी चेतावनी दिया करदे। धरतिया दियां प्लेटां तां अप्पु ही खिसकाणां शुरू करी दितियां हन। हिलणे कने कुदरती जेहड़ी तबाही होई सकदी है तिसा ते तां कई गुणां तबाही पैदा करने दे आसार माहणुऐं ही पैदा करी के रखी दितयों हन। क्या कुदरत मुआफ करी सकदी है। अज तुसां दिखा टनां वधा सरिया, गार्डर, मारबल, लोहे दी मशीनरी रोजे दी रोक ट्रकां वधी हिमाचले दे इलाके च जमा होआ करदी-क्या ऐ भी इसा देव धरतिया पर अनचाहा बोझ नीं है?

दूऐं पासें वैज्ञानिक इसा धरतिया पर तरह-तरह दियां बम्वां दिया तियारिया करने च लगियो, तिनहां जो टैस्ट करा करदे। जिसा वजह ते भी विचारिया धरतिया जो धमक पुजा करदी है—क्या ऐह जीणे दे आसार दुसा करदे हन। कुथी तां इनहां दी बम्वारी होआ करदी, तां कुत्थी धरतिया पर मौसम, धरतिया पैदा हूणे दा राज, इसा गुत्थिया सुलझाणें वास्तें भी इक बड़ी बड़ी मशीन फिट होई चुकियो है, वणगा क्या? अधी दुनियां तां इनहां वैज्ञानिकां ही हिलाई करी रखी दितियो है—रही गेईयो वाकी, तिसा दी कसर भी पूरी करने च जुटियो। हल्ली भी खलाशी नी छड्डी करदे। लगियो, लगियो वस। ऐह विज्ञानिक हिल्लण ही तां है। इसदा इलाज कोई नीं, सिर्फ परहेज है।

आर्थिक हिल्लण : इसते इलावा धरतिया पर पहलें वालियां हालातां कने हुणे वालियां हालातां दी तुलना करी के दिखा तां अज आबादी कितणी कि बधि चुकियो है। इसा ही बजह ते बेरोजगारी वधी गेईयो है। कने साड़िया सरकारा भी हत्थ खड़े करि दितयो हन। स्वरोजगार तलाश करने दी सलाह दिया करदी है। सारयां जो ही नौकरियां कुत्थु ते दैणियां।

अज तुसां दिखा कुसी टायमें पाणियें कने घराट चलदे थे। अज बिजलिया कने चक्कियां चला दियां। इसा बजह ते कईयां दे रूजगार बन्द होई गै। यानी सारा कम ही मशीनां दा होई गिया, जिसजो चलाणा खरे पैसे वाले आदमियां दे वसे दी गल है। इसते इलावा परिवारां विच भी अपणी-अपणी ही मर्जी लगी पै करना। कुसी पियोये दे चार पुत्र थे, तिन्हां भी अपणा- अपणा टपरू अलग-अलग ही पाई लिया, कोठियां बधा दियां, कुछ बाहरलियां रियाहता दियां, आदमियां भी बड़ियां- बड़ियां कोठियां पाई लेईयां, जमीनां घटणा शुरू होई गेईयां, आबादी होर वधी गेई, अनाज पूरा नीं होआ दा, बाहरे ते मंगवाणा पौआ दा। इसा वजह ते महंगाई भी अपणियां हदा ते ज्यादा वधी गेई— जेहड़ी घटणे च नीं औआ करदी, सभनां दियां तनखाहीं ज्यादा वधी गेईयां। लेकिन गरीबां दा दिल कुनी पुछिया? तिन्हां विचारियां जो तां अपणा टप्परू पाणा भी मुश्किल होई गिया। संन्जा खाई भ्यागा जो नीं। गरीबां दा तां रब्ब ही राखा है। सरकार भी भरियां जो ही भरा करदी है। ऐह आर्थिक हिल्लणं नीं ता होर इसा धरतिया पर क्या है। ज्यादा पैसे वाले जित्थु दिखा तित्थू ऐश करा करदे।

(बाकी अगले अंका च)

धौल़ाधार कवित्त

धौल़धार ठग्गियो

रसे-नैं भरोयां कनैं खूब मस्तोःयां इह्नां,
बद्दलां-दी धारा पर औण-जाण लग्गियो॥
घूं-घूं लाइयो इह्नां रसे-देयां लोभियां,
नौंयां-नौंयां, भौरेयां-दैं मनैं जोत जग्गियो॥
प्रीतां दीयां रीतां मंझ नौंएं-नौंएं रंग नित,
बांकड़ी नुहार, जणैं, नैणां-नैणां सःग्गियो॥
सतरंगी डोरेयां दे न्होरेयां-जो लाई-लाई,
इह्नां प्रेमी बद्दल़ां-ऐ धौल़ाधार ठःग्गियो॥

नटराज राजा

रूप है अनूप इसा नौंइयां मुटियारा दा,
हौल़ैं-हौल़ैं बद्दल़-ऐ धारा-पर छाअ-दा।
सैह्जैं-सैह्जैं-सैह्जैं सुट्टी वर्फा-दे फाह्यां-नैं,
अपणेयां हत्थां धौल़ाधारा जो सजाअ-दा॥
बोलदा 'पीयूष' पेयो मेघ हन तारियां,
प्यारां दे पल़ेस पाई बरखा बह्राअ-दा॥
गड़-गड़-गड़ कनैं गुड़-गुड़ लाःइयो,
जणैं नटराज राजा डमरू बजाअ-दा॥

लिक्खणुआं पाअरना

धौल़ाधारा दित्ते-नंअ नग़ीने मिंजो नौंएं-नौंएं,
तिसारेयां चरणां-च लिक्खणुआं पाअरना॥
नौंआं-नौआं रूप दिंद्दा नित नौंईं प्रेरणा,
लिखां-नां-ऐं नौंआं कनैं तांःइयों कवि क्हारना॥
बोलदा 'पीयूष' लग्गै सरसुति माता मिंजो,
देविया री शरणा-च हौल़ैं-हौल़ैं जाअरना!
छुणमुण-रुणमुण लाअईयो-ऐ मनैं मेरैं,
गुणमुण तिसा रेयां नग़मेयां गाअरना॥

डॉ. पीयूष गुलेरी

निक्की कथा

चिड़िया री सूझबूझ

इक राजा था तिसदे दो लड़के थे। राजा अप्पू तां वोहत अच्छा था कन्ने लोकां खातर तिन्ने कई अच्छी-अच्छी योजनाएं बनाऊरीयां थियां। तिसदी प्रजा तिसजो वोहत प्यार करदी थी। इक बार राजा बमार होई गय्या। पता नी किते-किते बैद आए होर तिसदा इलाज कित्या पर राजा ठीक नी होया। तिसदे दोनों मुंडू मना-मना च सोचदे रैंहदें भई काण जे ये राजा मरो होर असें राजा वणिए।

राजे दी बीमारी बढ़ती जाया करदी थी, राजे भी सोची लेया कि पता नी तिन्हे काण जे मरी जाणा? होर तिसदे मरने बाद तिसरे निकम्मे पाऊयां तिसरी सारी इज्जत मिट्टीया च मलाई देणी। राजा अपणे मन्ना च ये गल्ल सोच्या ही करदा था कि तांण ही इक आदमी राजे कन्ने मिलणे आया तिन्ने बोल्या मराज दूरा रे जंगला च इक चिड़िया रैंहदी जे तुस्सें मिजों वोलो तां मैं सै चिड़िया इथी सद्दी लेणी, फेर देखयों तुस्सें ठीक होई जाणा।

राजे वोल्या जा मोया जल्दी कर, ऐड़ी गल्लां जो देर नी लगांयी दी।

उसी दिन सै आदमी चिड़िया जो सद्दी के लेई आया। चिड़िया इक तां गांदी वोहत अच्छा थी, दूजे तिसा जो आने वाले टाईमां रा पता भी चली जादां था कि काण क्या होणें वाला हया?

चिड़िए गाना शुरू कितया, होर होले-होले राजा ठीक होणे लगी गया।

इक दिन राजे रे मुंडूआं सोच्या भई असां रा वुड़ा मरया नी, इस चिड़िए रे गाने कन्नै राजा ठीक होई गया इस खातर पहले इस चिड़िया जो मारी कन्नै फेर राज मारना।

चिड़िया जो सारी गल्ला रा पता लगी गया। तिसे राजे जो वोल्या मराज, तुसें अज इस महला च नी सोणा। तुसां रे मुंडू, कन्नै तुसरां री इक रानी, होर तुसां रे कुछ सिपाही तुसां जो मारने वाले हन, तां तुसें चतन होई जाओ होर राती जो अपना हुलिया बदली कन्नै सारी गल्ला जो देखो होर परखो। पहले तां राजे चिड़िया री गल्ला जो झूठ मन्या। पर राजे फिर सोच्या मिंजो इसा री बजहा ते ही नई जिंदगी मिली हाऊं इसा जो कियां भूली जाऊं।

आधी राती रे टैम्मा, राजे दे मुंडूआं अपणा कारनामा करने दी कोशिश कित्ती पर राजे दे वफादार सिपाहियां तिन्ना सारेयां जो पकड़ी कन्नै तलवारा कन्नै मारी-मारी दित्ये।

राजे तिस आदमिए जो अपने राज्य च अपणा दरबारी रखी लित्या होर चिड़िया जो अपणी वेटीया जेड़ा प्यार दित्या

प्रदीप गुप्ता

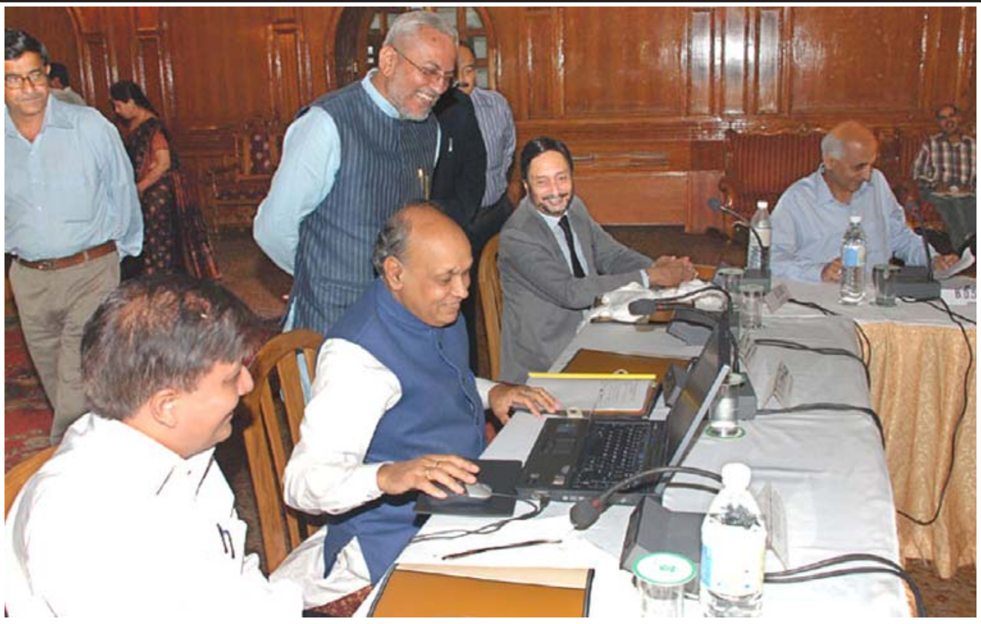

मुख्य मंत्री द्वारा दैनिक उत्तम हिन्दू की वेबसाइट का शुभारम्भ

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों जालन्धर से प्रकाशित होने वाले हिंदी दैनिक समाचार पत्र उत्तम हिन्दू की वेबसाइट का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होंने प्रबन्धन को बधाई देते हुए कहा कि इस वेबसाइट के शुरू होने से इंटरनेट प्रयोग करने वालों को लाभ मिलेगा।

मुख्य मंत्री द्वारा बैंकों से उदार वित्तीय...

(पृष्ठ एक का शेष) ऋण सम्बन्धी सभी मामलों का निर्धारित समयावधि के भीतर निपटारा किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि 'डिफरैंशयन रेट ऑफ इंटरैस्ट स्कीम' के अन्तर्गत ऋण का प्रवाह भी एक ऐसा अन्य क्षेत्र है, जिसमें बैंकों को और बेहतर प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि 4 प्रतिशत ब्याज दर पर समाज के समजोर वर्गों को निर्धारित 124.13 करोड़ रुपये के लक्ष्य के मुकाबले बैंकों द्वारा केवल 2.36 करोड़ रुपये प्रदान किए गए है। उन्होंने अटल आवास योजना तथा इंदिरा आवास योजना के तहत ग्रामीण आवास योजना के तहत पात्र परिवारों को उदार ऋण प्रदान करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2008–09 के दौरान ऋण का वार्षिक बहाव 4739.89 करोड़ रुपये रहा, जबकि गत पांच वर्षों में औसत वार्षिक वृद्धि 46.76 प्रतिशत रही, जो सभी क्षेत्रों में 25 प्रतिशत की राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि बैंकिंग क्षेत्र चालू वित्त वर्ष के लिए वित्तीय सहायता के अपने 5181.30 करोड़ रुपये के लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप ने कहा कि शत प्रतिशत पात्र, स्व सहायता समूहों को प्रदेश में 'क्रेडिट लिंक' सुविधा प्रदान की गई है तथा इनमें से अधिकांश व्यक्तिगत ऋण की सुविधा व लाभ उठा रहे हैं, जबकि प्रति सदस्य औसत ऋण 6800 रुपये है। उन्होंने कहा कि लघु उद्यमियता विकास से न केवल प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होगी, अपितु ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसरों में भी वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि बैंक न केवल सात प्रतिशत वार्षिक उपदानयुक्त ब्याज पर तीन लाख रुपये तक के उत्पादन ऋण प्रदान कर रहे हैं, बल्कि इसमें उपदानयुक्त कृषि बीमा योजना तथा किसानों के लिए व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा छत्र जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। यूको बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री एस.के. गोयल ने कहा कि कुल 1358 बैंक शाखाओं में से 1127 शाखाएं ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत हैं तथा प्रत्येक शाखा 4500 उपभोक्ताओं को सुविधा प्रदान कर रही है, जबकि राष्ट्रीय औसत केवल 1300 उपभोक्ता प्रति शाखा है। भारतीय रिजर्व बैंक क्षेत्रीय निदेशक डा. जे. सदाखादुल्ला ने शत प्रतिशत ऋण समावेश प्राप्त करने के लिए हिमाचल प्रदेश को बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रदेश निर्धारित समयावधि के भीतर ऋण–जमा अनुपात को प्राप्त कर लेगा। उन्होंने कहा कि वित्त जागरूकता शिविर आयोजित किए जाएंगे। नाबार्ड के मुख्य महाप्रबन्धक श्री एस.टी. रघुरमन ने प्रदेश में नाबार्ड द्वारा चलाई जा रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी।

यूको बैंक के क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री आर.के. मुर्गई ने भी अपने विचार रखे।

पांच पॉलिटैक्निक संस्थानों की स्थापना के लिए 61.5 करोड़

बागबानी एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री नरेन्द्र बरागटा ने गत दिनों शिमला में तकनीकी शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए बताया कि प्रदेश में पांच पॉलटैक्निक संस्थान स्थापित करने पर 62 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं। यह संस्थान राज्य के किन्नौर, सिरमौर, बिलासपुर, कुल्लू तथा लाहुल–स्पीति जिलों में स्थापित किए जाएंगे, जहां ऐसा कोई भी सरकारी संस्थान उपलब्ध नहीं है। श्री बरागटा ने कहा कि इन संस्थाओं को स्थापित करने के लिए सम्बन्धित जिलों में स्थलों के चयन एवं भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया आरम्भ की जा चुकी है तथा यह कार्य शीघ्र पूरा कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने राज्य में क्षेत्र आधारित जरूरतों, क्षेत्र सम्पर्क तथा उनकी आबादी के आधार पर तकनीकी तथा पॉलिटैक्निक संस्थान खोलने का निर्णय लिया है।

श्री बरागटा ने कहा कि प्रदेश के किसी भी संस्थान में रैगिंग को सहन नहीं किया जाएगा तथा इसमें संलिप्त व्यक्तियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाएगी।

बड़ू साहिब में ...

(पृष्ठ एक का शेष) महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश तथा देश की समृद्व सांस्कृतिक विरासत को संरक्षण प्रदान करने की भी आवश्यकता है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय मूल्य आधारित शिक्षा पर भविष्य में भी कार्य करता रहेगा। प्रो. धूमल ने सिरमौर की दूरदराज क्षेत्र में प्रभावशाली शिक्षा अधोसंरचना सृजित करने के लिए 'कलगीधार न्यास' की भूमिका की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह न्यास छात्रों को प्रथम कक्षा से लेकर पीएचडी स्तर तक शिक्षा उपलब्ध करवा रहा है।

उन्होंने प्राथमिक स्कूल टिक्करी को माध्यमिक तथा माध्यमिक पाठशाला बोंगली को उच्च पाठशाला में स्तरोन्नत करने की घोषणा की। उन्होंने लाना–मच्छेर, बड़ू, सरेरा तथा खखली के लिए उठाऊ पेयजल आपूर्ति योजना की भी घोषणा की। उन्होंने कहा कि बड़ूसाहिब बाईपास का निर्माण प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाएगा तथा लाना–मच्छेर सड़क तथा राजगढ़ बागथन–बनेठी सड़क को पक्का किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बोंगली– लान–कूई सड़क का निर्माण शीघ्र किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बड़ू साहिब मानगढ़ सड़क की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट स्वीकृति के लिए भारत सरकार को भेजी गई है। उन्होंने बड़ूसाहिब के लिए 33 के.वी सब स्टेशन स्वीकृत किया, बड़ूसाहिब को जोड़ने के लिए बाईपास का निर्माण किया जाएगा तथा राजगढ़ बनेठी सड़क को पक्का किया जाएगा। इटरनल विश्वविद्यालय के कुलपति डा. एम.एस.अटवाल ने मुख्य मंत्री को आश्वासन दिया कि विद्यार्थियों को विश्व स्तर की शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएंगी। कलगीधार न्यास के न्यासी श्री रविन्द्र पाल सिंह ने मुख्य मंत्री का स्वागत किया तथा न्यास की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डा. राजीव बिंदल, मुख्य संसदीय सचिव श्री सुख राम चौधरी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

पंचायत स्तर पर स्थापित...

(पृष्ठ एक का शेष) प्रोसेस आउटसोर्सिंग तकनीकों के बारे में पढ़ाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सरकार की कार्यप्रणाली में कम्प्यूट्रीकरण हो जाने से लोगों को बेहतर सेवाएं उपलब्ध होने के साथ–साथ शासन में पारदर्शिता भी आएगी।

भारत सरकार के अतिरिक्त सचिव सूचना प्रौद्योगिकी श्री एस.आर. राव ने कहा कि देश में सूचना प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में 50 हजार करोड़ रुपये का निवेश की रूपरेखा तैयार की गई है तथा सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं को देश के हर कोने तक पहुंचाया जाएगा। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिमाचल द्वारा प्राप्त उपलब्धियों की सराहना की। उन्होंने राष्ट्रीय ई–गवर्नेंस योजना पर विस्तृत प्रस्तुति भी दी। सचिव सूचना प्रोद्योगिकी हिमाचल प्रदेश श्री बी.के. अग्रवाल ने मुख्य मंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि प्रदेश में प्रशासनिक प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से कार्यकुशलता लाकर लोगों को उनके घरद्वार के निकट बेहतर सेवाएं उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से ई–गवर्नेंस पर इस दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया हैं निदेशक, सूचना प्रौद्योगिकी श्री सुभाशीष पांडा ने मुख्य मंत्री एवं अन्य का इस कार्यशाला में पधारने के लिए धन्यवाद किया।

प्रो० प्रेम कुमार धूमल
माननीय मुख्य मंत्री, (हिमाचल प्रदेश)

"बेटी अनमोल है"
जागरूकता अभियान
15 जुलाई से 15 अगस्त 2009

पी० टी० उषा
कल्पना चावला
डिक्की डोलमा
सुनीता विलियमस

महारानी लक्ष्मीबाई
(झांसी की रानी)
.... और

लता मंगेशकर
सानिया मिर्ज़ा
मेधा पाटेकर
अरून्धती रॉय

न जाने कितनी भारत वर्ष की बेटियों ने, अपने देश और परिवार का नाम रोशन किया, फिर भी बेटी को जन्म देने में कैसा डर और कैसी शर्म

प्रो० प्रेम कुमार धूमल
माननीय मुख्य मंत्री, (हिमाचल प्रदेश)
के कर कमलों द्वारा
"बेटी अनमोल है"
जागरूकता अभियान का शुभारम्भ 15 जुलाई 2009 को जिला शिमला से होगा व इसी दिन डा० राजीव बिन्दल द्वारा धर्मशाला से किया जाएगा

डा० राजीव बिन्दल
माननीय स्वास्थ्य मंत्री, हिमाचल प्रदेश

आम आदमी को लाभान्वित करना सरकार की प्राथमिकता

मुख्य मंत्री का पारदर्शी एवं जवाबदेही प्रशासन पर बल

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने प्रदेश में स्वच्छ, पारदर्शी, उत्तरदायी तथा बेहतर शासन की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि प्रदेश सरकार समाज के निर्धन, उपेक्षित तथा आम आदमी के कल्याण के प्रति वचनबद्ध है तथा इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रशासन को आम आदमी की बेहतरी एवं कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल करना चाहिए। मुख्य मंत्री ने यह निर्देश गत दिनों शिमला में उपायुक्तों तथा पुलिस अधीक्षकों के दो दिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर अपने सम्बोधन में दिए। सम्मेलन में प्रदेश सरकार के समस्त प्रधान सचिव, सचिव, विभागाध्यक्ष, सार्वजनिक उपक्रमों के प्रबन्ध निदेशक तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश में विकास की गति में तेजी लाने तथा लोगों के कल्याण को सुनिश्चित बनाने के लिए यह आवश्यक है कि योजनाओं को बेहतर तरीके से तैयार कर इन्हें सही परिप्रेक्ष्य में कार्यान्वित किया जाए ताकि अधिक से अधिक पात्र लोगों को इन योजनाओं के माध्यम से लाभान्वित किया जा सके।

प्रदेश में योजनाओं के कार्यान्वयन की प्रभावी निगरानी पर बल देते हुए मुख्य मंत्री ने कहा अधिकारियों को क्षेत्र में दौरा कर निर्माणाधीन कार्यों की प्रगति की नियमित रूप से समीक्षा करनी चाहिए। योजनाओं के तहत निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए क्षेत्र में चल रही गतिविधियों के निरीक्षण एवं देख-रेख कार्य को नियमित प्रक्रिया के तहत शामिल किया जाना चाहिए ताकि योजनाओं के वांछित परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

प्रो. धूमल ने कहा कि लोगों को त्वरित एवं शीघ्र न्याय मिलना चाहिए, जिससे वह शासन प्रक्रिया में सुधार से लाभ उठा सकें। यह तभी संभव हो सकता है यदि हमारा प्रशासन तंत्र लोक मित्र एवं जन सहयोगी हो।

मुख्य मंत्री ने बजट एवं अन्य घोषणाओं को निर्धारित समयावधि के भीतर पूरा करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इससे चुनावी घोषणा पत्र में लोगों से किए सभी चुनावी वायदों अक्षरक्षः लागू करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने इस बात पर संतोष व्यक्त किया कि प्रदेश सरकार की दृढ़ इच्छा शक्ति एवं प्रतिबद्धता तथा प्रशासन द्वारा बेहतर कार्य करने के परिणामस्वरूप चुनावी घोषणा पत्र के 80 प्रतिशत वायदों को पूरा किया जा चुका है। उन्होंने सम्बन्धित विभागों को निर्देश दिए कि शेष बचे चुनावी वायदों को शीघ्र पूरा किया जाए।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में पर्यावरण संरक्षण को संयुक्त बनाने के दिशा में विभिन्न कारगर पग उठाए गए हैं तथा हरे पेड़ों के कटान पर पूर्ण प्रतिबंध के साथ-साथ पोलीथीन थैलों के प्रयोग, सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान पर प्रतिबंध लगाया गया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश को पोलीथीन मुक्त एवं कार्बन न्यूट्रल राज्य बनाने के लिए लोगों विशेषकर विद्यार्थियों, गैर सरकारी संगठनों का सहयोग लिया जा रहा है। प्रो. धूमल ने कहा कि प्रदेश के लिए यह गौरव की बात है कि हिमाचल ने 20 सूत्रीय कार्यक्रम के कार्यान्वयन में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने विकास की इस गति को भविष्य में बनाये रखने पर भी बल दिया।

मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप ने विभिन्न कार्यक्रमों के तहत चल रहे कार्यों की निगरानी के लिए जिला स्तरीय समितियों की बैठकें आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अफीम एवं चरस की खेती को समाप्त करने के लिए किसानों को अन्य कृषि गतिविधियों को अपनाने के लिए कोई कारगर नीति बनाई जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि पुलिस प्रशासन को राज्य में विभिन्न मेलों एवं त्योहारों के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता बनाने के लिए कारगर पग उठाने चाहिए ताकि श्री नयना देवी में हुई भगदड़ जैसी दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोका जा सके। उन्होंने उपायुक्तों तथा पुलिस अधीक्षकों को निर्देश दिए कि प्रदेश के प्रत्येक नागरिक की जान माल की रक्षा एवं सुरक्षा को सुनिश्चित बनाया जाए।

पुलिस महानिदेशक श्री जी.एस. गिल ने प्रदेश में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति को बनाये रखने की दिशा में पुलिस द्वारा किए जा रहे प्रयासों का विस्तृत विवरण दिया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में नियोक्ताओं के लिए प्रवासी श्रमिकों का पंजीकरण अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पुलिस विभाग द्वारा नारकोटिक्स पर उच्च स्तरीय समिति की नियमित बैठक आयोजित की जा रही है तथा प्रदेश में चरस एवं अफीम की खेती को समाप्त करने के लिए विशेष अभियान आरम्भ किए गए हैं।

पंचायत घरों के निर्माण के लिए आठ करोड़ स्वीकृत

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने प्रदेश के मण्डी, बिलासपुर, सोलन, हमीरपुर, ऊना, शिमला, कांगड़ा तथा कुल्लू सहित आठ जिलों की 238 पंचायतों को पंचायत घरों के निर्माण के लिए प्रत्येक पंचायत को 3.40 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की है। उन्होंने कहा कि पुराने एवं खस्ता हालत में पंचायत भवनों के निर्माण के लिए भी बजट का प्रावधान किया गया है। यह जानकारी राज्य सरकार के एक प्रवक्ता ने दी।

प्रवक्ता ने कहा कि पंचायती राज विभाग द्वारा इस कार्य के लिए पहली किश्त के रूप में प्रत्येक पंचायत को 2.10 लाख रुपये के हिसाब से 5 करोड़ रुपये की राशि शीघ्र जारी की जाएगी। इस कार्य के लिए दूसरी किश्त निर्माण कार्य की स्थिति तथा प्रगति की समीक्षा के बाद जारी की जाएगी।

उन्होंने कहा कि चम्बा तथा सिरमौर जिलों में इस कार्य के लिए धन राशि पिछड़ा क्षेत्र विकास निधि से उपयोग करने के आदेश जारी किए गए है, जबकि किन्नौर तथा लाहुल स्पीति जिलों में पंचायत घरों के निर्माण के लिए धनराशि अनुसूचित जाति योजना से उपयोग में लाई जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने राज्य की प्रत्येक पंचायत को पंचायत भवन सुविधा उपलब्ध करवाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की 730 ग्राम पंचायतों के पंचायत घरों में अतिरिक्त कमरों के निर्माण के लिए प्रत्येक पंचायत को एक-एक लाख रुपये आंवटित किए जाएंगे।

राजस्व मामलों को निपटाने के लिए प्रारम्भ होगा विशेष अभियान

राजस्व विभाग द्वारा प्रदेश में लोगों के भूमि से सम्बन्धित इन्तकाल, तकसीम तथा निशानदेही जैसे लम्बित मामलों को शीघ्र निपटान के लिए एक राज्य व्यापी विशेष अभियान आरम्भ किया जाएगा। प्रदेश में राजस्व विभाग के विभिन्न अनुभागों के पुनर्गठन के लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई है, जो अपनी रिपोर्ट एक महीने के भीतर प्रदेश सरकार को सौंपेगी। यह निर्णय गत दिनों शिमला में उपायुक्तों, जिला पुलिस अधीक्षकों, सचिवों एवं विभागाध्यक्षों की बैठक में लिया गया।

मुख्य मंत्री ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि राजस्व विभाग में विभिन्न स्तरों पर राजस्व अधिकारियों के पास बड़ी संख्या में राजस्व मामले लम्बित पड़े हैं, जो सीधे तौर पर ग्रामीण लोगों से जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि इन्तकाल, तकसीम तथा निशानदेही जैसे मामलों को विशेष अभियान के तहत समयबद्ध तरीके से निपटाया जाना चाहिए, ताकि न्याय में देरी के कारण निर्धन लोगों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि राजस्व मामलों के निपटारे की प्रक्रिया की नियमित रूप से समीक्षा की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि सप्ताह में सोमवार का दिन राजस्व मामलों के निपटारे के लिए ही निर्धारित किए जाने की आवश्यकता है तथा ऐसे मामलों के शीघ्र निपटारे को सुनिश्चित बनाने के लिए राजस्व मामलों में निपुण सरकारी अभियोजकों की सेवाएं ली जानी चाहिए।

बैठक में मुख्य सचिव की अध्यक्षता में एक समिति गठित करने का निर्णय लिया गया है, जो प्रदेश सरकार को बन्दोबस्त तथा अधिक्रमण के मामलों के निपटारे के लिए बेहतर तौर-तरीकों के बारे में सुझाव देगी, ताकि लम्बित मामलों को शीघ्र निपटाया जा सके। अतिरिक्त मुख्यसचिव वन, अतिरिक्त मुख्य सचिव राजस्व, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव, प्रधान सचिव वित्त, प्रधान सचिव विधि तथा सचिव कार्मिक विभाग इस समिति के सदस्य होंगे। समिति को अपनी रिपोर्ट प्रदेश सरकार को एक महीने के भीतर सौपनी होगी।

मुख्य मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रदेश में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन-जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, विधवाओं, आई.आर.डी. पी. व बी.पी. एल. परिवारों, अक्षम व्यक्तियों, भूतपूर्व सैनिकों तथा समाज के उपेक्षित वर्गों द्वारा छोटे-मोटे अतिक्रमण के मामलों में उदार रवैया अपनाए जाए, बशर्ते कि ऐसे अतिक्रमण किसी जायज उद्देश्यों के लिए किया गया हो। उन्होंने कहा कि अतिक्रमण के मामले में दोषी पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति, चाहे वह कितना ही प्रभावशाली क्यों न हो, को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने प्रदेश सरकार द्वारा अतिक्रमण को नियमित करने के मामलों को समयबद्ध तरीके से निपटाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि राज्य की बहुमूल्य सम्पदा को सुरक्षित रखने के लिए समन्वित प्रयास किए जाने चाहिए।

प्रो. धूमल ने कहा कि राज्य में राजस्व के लम्बित मामलों को निर्धारित समयावद्धि के भीतर निपटाने की दिशा में सराहनीय योगदान देने वाले कर्मचारियों को सम्मानित करने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा शुरू की गई योजना के तहत पुरस्कृत किया जाएगा।

मुख्य मंत्री ने कहा कि सरकार राज्य के प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 10 लाख रुपये की लागत से एक-एक अम्बेडकर भवन निर्मित करने के प्रति वचनबद्ध है, जिसके लिए 6.80 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि योजना के तहत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को समयावद्धि के भीतर पूरा किया जाए।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल शिमला में हि.प्र. प्रेस सलाहकार समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए।

राज्य को सही परिप्रेक्ष्य में प्रचारित करने का मीडिया का आह्वान

हिमाचल प्रदेश प्रेस सलाहकार समिति की बैठक आयोजित

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने प्रेस से प्रिंट तथा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से हिमाचल प्रदेश द्वारा अर्जित उपलब्धियों को राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक कवरेज प्रदान करने का आग्रह किया है। मुख्य मंत्री गत दिनों शिमला में हिमाचल प्रदेश प्रेस सलाहकार समिति की बैठक को सम्बोधित कर रहे थे।

मुख्य मंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश ने सभी क्षेत्रों में व्यापक विकास किया है और हिमाचल प्रदेश द्वारा अर्जित उपलब्धियों को राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है, किन्तु इन विशिष्ट उपलब्धियों को मीडिया के माध्यम से उतनी कवरेज नहीं मिली, जितनी उन्हें राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मिलनी चाहिए थी। उन्होंने कहा कि समाचार पत्रों का एक ही एडीशन समय की मांग है ताकि उसमें राज्य तथा राज्य के बाहर रह रहे लोगों को प्रदेश के बारे में जानकारी उपलब्ध हो सके। उन्होंने कहा कि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में किए गए प्रयासों के लिए हिमाचल प्रदेश को सराहा गया है और इसके लिए राज्य को गोल्डन डायमंड पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है। उन्होंने कहा कि राज्य में राष्ट्रीय स्तर के कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जिन्हें राज्य से बाहर भी प्रचारित किए जाने की आवश्यकता है ताकि देश के अन्य राज्यों में भी लोग उन कार्यक्रमों की ओर आकर्षित हो सकें, जिनका उन्हें लाभ मिल सके।

मुख्य मंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश को देश भर में पर्यटन गतिविधियों के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ आंका गया है, जबकि राजधानी शिमला को श्रेष्ठ पर्यटन केन्द्र के रूप में नवाजा गया है। उन्होंने कहा कि राज्य में पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जिनमें होम स्टे योजना भी शामिल है। इस योजना के अन्तर्गत पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को इसके साथ जोड़ा जा रहा है ताकि पर्यटक एक ओर जहां राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से रू-ब-रू हो सकें, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों के व्यक्तियों के लिए अतिरिक्त आय के साधन भी सृजित हो सकें।

मुख्य मंत्री ने विभिन्न क्षेत्रों में राज्य द्वारा अर्जित उपलब्धियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इन उपलब्धियों को हर स्तर पर प्रचारित किए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अधिक से अधिक सकारात्मक कवरेज प्राप्त करने में हिमाचल प्रदेश की सहायता करने का प्रेस सलाहकार समिति के सदस्यों का आहवान किया ताकि हिमाचल प्रदेश अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपलब्धियों के लिए जाना जा सके। मुख्य मंत्री ने प्रेस सलाहकार समिति के सदस्यों द्वारा दिए गए बहुमूल्य सुझावों के लिए उनका आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सुझाव राज्य में प्रशासन को और अधिक प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध होंगे।

सचिव सूचना एवं जन सम्पर्क श्री रामसुभग सिंह ने मुख्य मंत्री तथा अन्यों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार कामकाज में पारदर्शिता और आम आदमी के कल्याण के प्रति वचनबद्ध, है और इस दिशा में सतत् प्रयास किए जा रहे हैं।

निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क श्री बी.डी. शर्मा ने समिति के सदस्यों से आग्रह किया कि विभाग के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विभाग का मार्गदर्शन करें ताकि विभाग सरकार और जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतर सके। इस अवसर पर विभिन्न समाचार पत्रों के सम्पादकों ने अपने अनुभव सांझा किए और बैठक में विस्तृत विचार विमर्श कर उपयोगी सुझाव दिए। राज्य मीडिया सलाहकार समिति के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र राणा, मुख्य सचिव श्रीमती आशा स्वरूप, राज्य पुलिस महानिदेशक श्री जी.एस. गिल और अन्य वरिष्ठ अधिकारी बैठक में उपस्थित थे।

प्रकाशकः बी.डी. शर्मा, निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला–171002, मुद्रकः राजीव कुमार शंकर, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला–171005, फोनः 2830378, प्रधान सम्पादकः बी.डी. शर्मा, वरिष्ठ सम्पादकः आर.एस. नेगी, सम्पादकः यादविन्दर सिंह चौहान, कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला–171005, फोन व फैक्सः 2633145, ई–मेलः girirajhp@gmail.com., girirajhp@yahoo.co.in OR girirajweekly 1978@yahoo.co.in प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)